धर्म जीवन

दिसम्बर – 2013

* भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में वार्षिक साधनों के आरम्भिक दिन में उनका महाशक्तिशाली उपदेश
* सच्चे उपास्य देव भगवान देवात्मा
* एक नए युग के उत्पन्न कर्त्ता भगवान् देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव
* भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का मनुष्यात्माओं में अनुपम कार्य

महोत्सव के लिए देव आश्रम कैसे पहुंच सकते हैं।

1) पटियाला से ज़ीरकपुर पहुंच कर चौंक पर ही उतर जाईए। वहां से अम्बाला रोड से पुल के नीचे से पहुंच जाएं, साथ ही मिन्नी बसें लालडू को थोड़ी थोड़ी देर बाद चलती हैं, उनसे बैठकर डेरा बस्सी को पार करके तीन किलोमीटर पर गलास पैलेस (Glass Palace) की ऊंची बिल्डिंग के पास उतर जाईए, देव आश्रम उसके पास ही है।

2) मोहाली बस अड्डे से पंजाब लुधियाना आदि से आने पर लालडू के लिए बसें आम मिलती हैं।

3) अम्बाला से चण्डीगढ़ की ओर आने वाले टोल पलाज़ा (जहां कारें, बसें रूककर टैक्स देते हैं) ढाई किली मीटर चण्डीगढ की ओर जाते हुए गलास पैलेस पर उतर जाएं।

4) चण्डीगढ से पिकाडली चौक से ज़ीरकपुर के लिए आम सवारी मिलती है, वहां से अम्बाला रोड पर मिन्नी बस पकड़कर गलास पैलेस पर उतर जाएं दिक्कत आने पर निम्नलिखित फोन नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते है: 09463836617, 9815531038

पेज 2 का बाकी

हस्ती हैं, उनका देव रूप परम हितकर, परम उपकारी है। पर मुझ अबोधी, अन्धे और पागल को इसकी हकीकत नज़र नहीं आती थी, मैं इस मिशन के जल्दी नष्ट होने की कामना करता था। जैसे विज्ञान में स्टीफन सन, पास्चर ने नई खोजें करके नये ज्ञान के द्वार खोले हैं। भगवान देवात्मा ने भी अध्यात्मिक क्षेत्र में नई खोजें की हैं उन्होंने बताया कि मनुष्य सुख अनुरागी है, सुखों का दास है। कई मनुष्यों ने बेमिसाल कुर्बानियां की हैं, महान कारज किए हैं, परन्तु सुख अनुरागों से वह भी ऊपर नहीं थे। सुख अनुरागी के लिए मोह ग्रस्त, पाप ग्रस्त, मिथ्या ग्रस्त और अज्ञान ग्रस्त होना ज़रूरीहै।

1) मनुष्यों को बारीकी के साथ पाप सम्बन्धी आठ बुराईयों से बचना अवश्यक है।

2) प्रत्येक मनुष्य को, पशु जगत या वनस्पति जगत सम्बन्धी कोई न कोई सेवा का काम करना ज़रूरी है।

3) एक और महान काम अर्थात दुसरों का दुख वा ज़रूरत महसूस करके त्याग करना चाहिए।

इसके साथ ही सारा प्रोग्राम ख़त्म हुआ, सहायकारियों की सहायता से यह प्रोग्राम कुछ न कुछ सफल रहा।

धर्म जीवन

खण्ड 26 अंक 12
दिसम्बर – 2013
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में वार्षिक साधनों के आरम्भिक दिन में उनका महाशक्तिशाली उपदेश,

10 नवम्बर 1927 ई०

यद्यपि इस बात का बहुत अफ़सोस है कि इस आरम्भिक दिन से कई दिन पहले से परम हित स्वरुप भगवान् देवात्मा एक या दूसरे और कारण के सिवाय अपने अद्वितीय जीवन व्रत सम्बन्धी नाना हितकर कार्यों में सीमा से अधिक परिश्रम करने से अधिक बिमार हो गए थे और यह विश्वास करने की गुंजाइश थी कि अब वे आरम्भिक दिन की यह सभा न करा सकेंगे; और उनके पास रहने वालों ने भी उन्हें यही सलाह दी थी, कि इस हालत में अगर सभा कराई गई तो ज़्यादा हानि की शंका है। इसलिए यह सभा मुल्तवी रखी जाए। फिर भी हमारे परम हितकर्ता भगवान् ने इस हालत में भी यही फरमाया कि अभी हम इस सभा को मुलतवी करने की आज्ञा नहीं दे सकते, क्योंकि जैसे नेचर में प्रतिकूल घटनाएं पैदा होती हैं, वैसे ही अनुकूल घटनाएं भी, इसलिए ऐसी दशा में अभी कोई पूरा फैसला नहीं किया जा सकता। सम्भव है, सभा के समय से पहले कुछ अनुकूल हालात पैदा हो जाएं। हुआ भी यही। सभा से एक दिन पहले उनकी शारीरिक अवस्था में कुछ बेहतरी का रुख़ शुरु हो गया। यद्यपि बहुत दुर्बल थे फिर भी सभा में तशरीफ ले आए और अपना उपदेश देने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने अपने आत्मिक देव बल पर विश्वास करके सभा का काम आरम्भ कर दिया। परम् पूजनीय भगवान ने अपना महाशक्तिशाली उपदेश शुरु करने से पहले अपने परम लक्ष्य प्रकाशक जीवन मन्त्र के जिन दो पदों को गाकर हृदय के गहरे भाव से शुभ कामना की वे ये हैं:-

सत्यस्य प्रेमी अहं, सत्यं मया जयं लभेत्।
शुभस्य च प्रेमी अहं, शुभं मया जयं लभेत्।

अर्थात् मैं सत्य का प्रेमी हूं, सत्य मेरे द्वारा जय लाभ करे!

मैं शुभ का प्रेमी हूँ, शुभ मेरे द्वारा जय लाभ करें!

फिर भगवान ने इस शुभ अवसर पर सभा में उपस्थित जनों से मिलने पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता का प्रकाश किया और उसके बाद पिछले इतवार की सभा में सामाजिक जनों ने जिस-जिस विषय में उनकी देव बाणी के सुनने की आकांक्षा प्रकट की थी, उसके अनुसार जिन्होंने जिन दो विषयों में अपनी पूर्णत: दुर्लभ और परम कल्याणकारी देव ज्योति और अपने देव तेज का महामूल्य दान प्रदान किया, वे दोनों विषय ये थे : 1. ''हमारे भीतर अपनी नीच अवस्था से निकलने का फिक्र पैदा हो और हम परम पूजनीय भगवान् देवात्मा को अपने सच्चे परम हितकर्ता के रुप में देख सकें'' 2. ''इन विशेष दिनों को किस तरह अधिक से अधिक सफल बनाया जा सकता है?''

पहली बात के विषय में हमारे परम हितकर्ता परम पूजनीय भगवान् ने इस प्रकार फरमाया, कि जिन्होंने इस विषय में उपदेश प्राप्त करने की प्रार्थना की है, उनके बारे

में हमें यह मान लेना चाहिए कि वे यह समझते हैं कि उनकी हालत अवश्य नीच हालत है, लेकिन उनके भीतर इससे निकलने की फिक़्र नहीं है। अब प्रश्न यह है कि यदि उनके अन्दर अपनी नीच या पतित अवस्था के विषय में सच्चा बोध पैदा हो चुका हो तो क्या वे उसकी उपस्थिति में निश्चिन्त रह सकते थे? बिल्कुल नहीं। अपनी किसी नीच या पतनकारी अवस्था के सम्बन्ध में सुन सुना कर या अपनी कल्पना से कोई सही परिणाम निकाल कर यह मानना या समझना कि हमारी या मेरी अवस्था नीच है, (अर्थात् हमारे आत्मा जिन नीच या पतनकारी अनुरागों और नीच और पतनकारी घृणाओं में फंसे हुए हैं, उनके कारण हमारा आत्मा निश्चय दिनों दिन नीच या पतित ही बन सकता है कि जो परिणाम अवश्य सही है) और बात है और अपनी किसी पतनकारी हालत के सम्बन्ध में उस हालत के नतीजे से डरना और उससे मोक्ष पाने की फिक़्र में डूबना और बात है। मान लो कि एक आठ-दस वर्ष के बच्चे को यह बता दिया जाए कि तुम्हें तपेदिक की मोहलक बिमारी है और वह बिमारी सचमुच उसमें मौजूद हो और वह इस बात को सिर्फ अपने सम्बन्धियों से सुनकर किसी और से भी यह कहें, कि मुझे तपेदिक की बिमारी है तो उसका ऐसा कहना तो ठीक हो सकता है, लेकिन जब तक उस लड़के को उस बिमार के भयानक परणिामों का सच्चा रुप दिखाई न दे और उसे यह प्रतीत न हो कि जो कीड़े उसके फेफड़ों को खा रहे हैं वे जानलेवा कीड़े हैं और यदि वे किसी उपाय से नष्ट न हो सकें, तो फिर उनके द्वारा उसके अपने इन फेफड़ों और उनके साथ उसके जीवित शरीर का नष्ट हो जाना या मर जाना भी ज़रुरी है, तब तक वह इस सम्बन्ध में बेफ़िकर रहेगा। वह बेशक अपने शरीर की मृत्यु नहीं चाहता, लेकिन जब तक और अपनी बिमारी के बारे में यह बोध न हो कि वह उसके लिए जानलेवा है और उस बिमारी के चले चलने से उसका शरीर एक दिन मर जाएगा, तब तक उसके दिल में उसके बारे वह डर पैदा नहीं हो सकता, कि जो उसके अन्दर कोई कष्टदायक चिन्ता पैदा कर दे; और इसलिए वह एक घातक बिमारी में ग्रस्त होकर भी उससे अपने दिल में कोई चिन्ता या कष्ट अनुभव नहीं करता और इस बेफ़िक्री की हालत में ही किसी और के सामने यह कहता है, कि मुझे तपेदिक की बिमारी है और यह कह कर भी बखूबी खुश और सन्तुष्ट रहता है। मगर उसके जो माता-पिता उसकी घातक बिमारी की सच्चाई को जानते हैं, वे उसकी तरह निश्चिन्त दिखाई नहीं देते। वे उसकी इस घातक बिमारी से उदास और चिन्तित पाए जाते हैं, और चाहते हैं कि किसी तरह उनका बच्चा इस जानलेवा बिमारी से निकल आए।

इसी तरह करोड़ों इन्सान अपने-अपने आत्मा के विषय में कोई सच्चा ज्ञान या बोध नहीं रखते और वे इसके पतनकारी रोगों और उनके सांघातिक फलों के सम्बन्ध में पूर्णत: अबोधी रह कर खुश रहते हैं, वे दिनों दिन पतित हो रहे हैं। आत्मिक मौत के नज़दीक जा रहे हैं। इस पतन की राह में वे इस दुनिया में भी नाना अवसरों पर नाना प्रकार के कष्टों और मुसीबतों को उठाते हैं, परन्तु फिर भी इस महा पतित अवस्था में भी निश्चिन्त रहते हैं।

अब यदि नेचर के प्रबन्ध में ऐसा सम्भव हो कि वह जिस अज्ञान या अबोधता के गहरे अंधेरे में ग्रस्त हैं, उनके भीतर कोई ऐसी ज्योति प्रविष्ट हो सके कि जिसके प्रवेश पाने से उन्हें सचमुच अपने आत्मिक पतन के महाभयानक परिणामों की सच्ची तस्वीर दिखाई दे सके, तो फिर वे किसी तरह भी बेफ़िकर नहीं रह सकते। प्रत्येक मनुष्य दु:ख और मौत से बचना चाहता है। हां, पशु जगत का भी प्रत्येक जीव मौत और दु:ख से बचना चाहता है। अब अगर उसे कहीं सचमुच दु:ख महसूस हो और मृत्यु की तस्वीर नज़र आए, तो वह फ़िक्रमन्द होने के बिना नहीं रह सकता। एक-एक नन्हा सा बच्चा जो अपनी माता की गोद में मर रहा है, वह स्वयं तो नहीं जानता कि मरना क्या होता है, या शरीर की मृत्यु क्या होती है, लेकिन उसकी माता उसे मरता हुआ देखकर आराम या शान्ति की हालत में नहीं रहती। वह उसे उस हालत में देखकर बहुत उदास दिखाई देती है। उसकी आंखों में बार-बार आंसू भर आते हैं। वह उसे उस मौत की ओर जाता देख कर एक-एक बार फूट पड़ती है; और रोने लगती है। उसकी ऐसी हालत क्यों होती है? इसलिए कि वह यह देख रही है कि उसका बच्चा मर रहा है और उस बच्चे के साथ वह अपने हार्दिक आकर्षण

के कारण यह नहीं चाहती कि वह मर जाए।

इसी तरह से जिन मनुष्यों को अपने आत्मिक पतन और उसकी मृत्यु की कोई चिन्ता नहीं है, वे इसलिए बेफ़िक्री की हालत में रहते हैं कि उनके भीतर आत्मा और आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में पूर्ण अन्धकार भरा हुआ है। वे अपने-अपने आत्मा और आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में पूर्ण अबोधी और पूर्ण अज्ञानी हैं और घोर अन्धकार की हालत में हैं। वे धनवान हो सकते हैं, पहलवान हो सकते, अच्छे डिग्री प्राप्त हो सकते हैं, राजा और महाराजा हो सकते हैं परन्तु वह आत्मा के लिहाज़ से पूर्ण अज्ञानी और पूर्ण अबोधी हैं। इस पर भी वे यदि अपने अहं अनुराग के कारण अपनी सम्पत्ति या अपनी शारीरिक शक्ति या अपनी विद्या के घमण्ड से अकड़ते हों तो उन की हालत और भी अधिक कृपा पात्र है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसे कृपा पात्र मनुष्यों को यह अवस्था अपने प्रकृत रुप में किस प्रकार दिखाई दे? याद रखो, कि बाहर कोई रोशनी ऐसी नहीं कि जो उनके भीतर की ऐसी बुरी अवस्था को उन्हें दिखा सके। सूर्य की रोशनी उन्हें अपनी इस भयानक दशा का रूप नहीं दिखा सकती। मिट्टी या सरसों के तेल से जो रोशनी पैदा होती है, वह भी उनके आत्मिक पतन और उनकी आत्मिक मृत्यु की। सही और सच्ची तस्वीर को उनके सामने उपस्थित नहीं कर सकती। बिजली की रोशनी या कोई और ऐसी ही रोशनी भी उनके इस अन्धकार ग्रस्त दिल को प्रकाशमान नहीं कर सकती। यदि ऐसा हो सकता हो तो किसी चोर या किसी रिश्वतख़ोर को उसकी बुरी अवस्था दिखाने और उसे स्वीकार कराने में उस रोशनी से काम लिया जाता और गवर्नमेंट को भी उससे बड़ी आसानी हो जाती, परन्तु ऐसी नहीं है, अर्थात् बाहर की कोई ऐसी रोशनी, यहां तक कि बाहर के सूरज की भी रोशनी किसी मनुष्य के आत्मा के अन्धकार को दूर नहीं कर सकती और उसकी वास्तविकता को उसे नहीं दिखा सकती। तब वह कौन सी रोशनी है जो आत्मा के सच्चे गठन प्राप्त रूप और उसमें उसके नीच-अनुरागों और उसकी नीच घृणाओं के द्वारा जिन-जिन महाभयानक रोगों और पतन की उत्पत्ति होती है, उसके उस पतन और उस पतन के परिणामस्वरुप जो आत्मिक मृत्यु होती है उसके साथ-साथ विविध प्रकार का जो-जो दुःख और कष्ट प्राप्त होता है, उस की सच्ची तस्वीर को दिखाए, और उसे दिखाकर उनके अन्दर उसके लिए सच्चे ख़ौफ या भय को पैदा कर सके, जिसके पैदा होने से वह फिर अपनी ऐसी दुर्गति की ओर से बेफिक्र नहीं रह सकता; बल्कि गहरे फ़िक्र में पड़ सकता है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि वह अद्वितीय रोशनी देवात्मा की देव ज्योति है जो कि जो इस प्रकार का चमत्कार पैदा कर सकती है और देवात्मा का देव तेज ही इस अवस्था से निकलने के लिए इस में काफ़ी और उच्च घृणा पैदा कर सकता है। यही उन की देव ज्योति और उनके देव तेज की यह लीला उनकी अद्वितीय देव लीला है, कि जिस का प्रकाश इस दुनिया में उनके आर्विभाव से पहले किसी भी कहलाने वाले देवता या देवी या हादी या गुरु या ऋषि या मुनि, नबी या पीर, सन्त या अवतार आदि के द्वारा नहीं हुआ।

परन्तु जैसे सूर्य का प्रकाश ऐसे किसी कमरे के भीतर नहीं घुस सकता कि जिसकी दीवारों और जिसके किवाड़ों आदि में से उसके घुसने के लिए कोई रास्ता नहीं होता। वैसे ही देवात्मा की यह देव ज्योति भी किसी ऐसे मनुष्य के आत्मा में नहीं घुस सकती, कि जो पतित होते-होते उसके प्राप्त करने के योग्य नहीं रहा। बेशक देवात्मा की देव ज्योति प्रत्येक आत्मा के भीतर प्रवेश नहीं कर सकती, लेकिन जो अधिकारी जन हैं, उनकी अपनी-अपनी योग्यतानुसार उनमें अवसर पाकर अवश्य प्रवेश करती है और उन्हें उनकी योग्यतानुसार उनकी पतित अवस्था का अवश्य बोध कराती है।

नेचर के विकास क्रम में उचित समय के आने पर एक देवात्मा ही ऐसे आत्मिक सूर्य प्रकट हुए हैं कि जो अधिकारी जनों को अपनी अद्वितीय देव ज्योति और अपने अद्वितीय देव तेज का दान देते हैं और आत्मिक पतन की अवस्था को असल भयानक रुप में दिखाते और उससे उनकी योग्यता के अनुसार उद्धार करते हैं। क्या इस प्रकार

के किसी उद्धार का प्रमाण मिल सकता है? निश्चय, एक दो चार नहीं, दर्जनों लोगों के जीवन से ऐसा प्रमाण मिल सकता है। इस सभा में ही ऐसे कितने जन विद्यमान है कि जिन तक देवात्मा की देव ज्योति और उनके देव तेज ने पहुंचकर ऐसा हितकर परिवर्तन उत्पन्न किया है जो परिवर्तन उनमें और कोई नहीं कर सका था, और न कर सकता था। औरों को छोड़ कर इस समय उदाहरण के तौर पर श्रीमान राम लाल जी के जीवन को देखें। वह देवात्मा के देव प्रभावों के पहुंचने से पहले आत्मा के लिहाज़ से पूर्ण अन्धकार ही हालत में थे। वह आर्य समाज के बड़े पक्के सदस्य थे। वह ईश्वर और वेदों के विश्वासी थे। वह सन्ध्या करते थे और इसके साथ ही वह मौज से खूब रिश्वत लेते थे और कोई तकलीफ मालूम नहीं करते थे। केवल यही नहीं बल्कि ऐसा करने में संतोष प्रतीत करते थे। एक बार का ज़िक्र है कि तीन सौ रुपया रिश्वत में प्राप्त करके उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया था। अब प्रश्न यह है कि इस अवस्था में किस प्रकार तबदीली आई? देवात्मा के एक सेवक के द्वारा उन तक उनकी खुशखबरी पहुंची, और उन्हें भगवान के देव प्रभाव अर्थात् उनकी देव ज्योति और उनके देव तेज को लाभ करने का महा सौभाग्य मिला और उन्हें वह रिश्वत लेना अपनी आत्मा के लिए महा पतन और विनाशकारी नज़र आया। वह रिश्वत जो पहले उन्हें सुखदायक प्रतीत होती थी, अब कष्ट दायक अनुभव होने लगी। उनके लिए सुखदायक होने के स्थान में दुःखदायक बन गई। उनके अन्दर यह उल्टी गंगा किसने बहा दी? देवात्मा के देव प्रभावों ने। और ऐसा होने पर उन्होंने न केवल आगे के लिए रिश्वत लेना छोड़ दिया, बल्कि समय के साथ देव प्रभावों का और अधिक अमल होने पर उन्होंने क्षमा प्रार्थना के साथ सैकड़ों रुपया लोगों को वापिस किया। अब ऐसा क्यों हुआ? नेचर में उसके किसी अटल नियम के पूरा होने के बिना कोई घटना पैदा नहीं होती। तब यह सब कुछ किस तरह हुआ? यह सब इसलिए हुआ कि देवात्मा जो आत्मिक जगत के सच्चे सूरज की न्याई प्रगट हुये हैं, उनकी आत्मिक रुप प्रदर्शक देव ज्योति उन तक पहुंची और उसने उनके आत्मिक अन्धकार को उनकी योग्यतानुसार दूर करके उनके इस पाप और इस पाप से उनका जो आत्मिक पतन हुआ था, उसकी तस्वीर दिखा दी; और उनके देव तेज ने उनके आत्मा में उन पापों के लिए आकर्षण की जगह विकर्षण पैदा कर दिया। सुख की जगह दुःख उत्पन्न कर दिया। क्या ऐसी सच्ची और उच्च करामातें इस दुनिया में कभी किसी और ने भी दिखाई हैं? हरगिज़ नहीं। हमारा सारे मनुष्य जगत को यह खुला चैलेंज रहा है, और अब है कि जब तक किसी जन के भीतर किसी भी मिथ्या या किसी भी बुराई के लिए प्यार या अनुराग रहता है, तब तक उसके लिए उस मिथ्या या बुराई पर स्थिर रहना और उसका कर्ता होना नेचर के अटल नियमानुसार आवश्यक बात है। कोई मनुष्य किसी बुराई या मिथ्या को छोड़ने के लिए तब ही तैयार हो सकता है कि जब उसके भीतर उसके लिए प्यार की बजाये घृणा पैदा हो; और उससे उसे जहां सुख या आराम मिलता था, वहां उस सुख या आराम की बजाय उसमें तकलीफ या दुःख उत्पन्न हो। देवात्मा के अतिरिक्त इस दुनियां में किसी देवता या देवी तथा हादी या गुरु या ऋषि मुनि या सिद्ध या बुद्ध या तीर्थकर या वली या पीर या पैग़म्बर को यह शक्ति प्राप्त न थी और इसलिए वे इस प्रकार के कोई सच्चे करिश्में न दिखा सके; और जिन करिश्मों के दिखाने का उनकी ओर से दावा किया जाता है, वे नेचर के अटल नियमों के विरुद्ध होने के कारण पूर्णतः झूठे थे, और झूठे हैं। देवात्मा के द्वारा इस दुनिया में अधिकारी लोगों में उनकी योग्यता के अनुसार इस प्रकार की आश्चर्यजनक उच्च तबदीलियां पैदा हुई हैं, और होती हैं कि जिस का प्रमाण देव समाज से सम्बन्ध रखने वाले सैंकड़ों जनों के जीवन में रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है और किसी में भी शक्ति नहीं है कि वह इस सच्चाई को किसी प्रकार ग़लत साबित कर दें। तब अपने आत्मिक पतन की प्रकृत अवस्था को देखें और उनके देव तेज को पाकर उस अवस्था से अपनी – अपनी योग्यता के अनुसार उद्धार लाभ करें और इससे भी बढ़कर आत्मिक उच्च बोधों को को प्राप्त होकर अपने आत्माओं का विकास साधन करें।

फिर इससे आगे यह प्रश्न है कि देवात्मा के द्वारा तुम्हारे आत्मा में जो-जो कुछ परिवर्तन आया है, उससे तुम्हारा हित हुआ है या अहित? यदि उससे तुम्हारा हित हुआ है, जैसा कि अवश्य हुआ है, तो फिर क्या देवात्मा ही तुम्हारा सच्चा और परमहित कर्ता नहीं और उनके सिवाय और कोई नहीं? मनुष्य के अस्तित्व में उसका आत्मा ही मूल वस्तु है। उसके इस आत्मा का जो हित है, वही सबसे उच्च और सबसे बड़ा हित है। इसलिए जिस देवात्मा के द्वारा सच्चा आत्मिक बोध होता है, सच्चा आत्मिक ज्ञान मिलता है, सचमुच किसी पाप या पतन से उद्धार होता है, सचमुच कोई उसमें उच्च भाव पैदा होता है, वही देवात्मा उसके या तुम्हारे परमहित कर्ता हैं। बेशक तुम्हारे उपकारी और भी बहुत से हैं मगर तुम्हारा आत्मिक हितकर्ता देवात्मा के सिवाय कोई नहीं, और तुम देवात्मा की ही देव ज्योति में निश्चय ही उन्हें इसी परमहित कर्ता रुप में देख और उपलब्ध कर सकते हो।

अब दूसरी बात यह है कि देवात्मा के सम्बन्ध में इन विशेष दिनों को किस प्रकार के साधनों के द्वारा सफल बनाया जा सकता है? उसके उत्तर में यह कहना काफी है, कि जो लोग अपने आत्मिक पतन की इस हालत में पहुंचे हुए हैं, कि उन्हें अपने आत्मा के सम्बन्ध में कोई पाठ या विचार करना पसन्द नहीं, उस विषय में किसी पुस्तक का लेना या ख़रीदना पसन्द नहीं, इस विषय में किसी उच्च संगत में जाना और बैठना पसन्द नहीं, और ''मौज बहार'' और इससे भी बढ़कर देवात्मा को घृणा करने और उसके सम्बन्ध में घृणा फैलाने के काम के सिवाय और कोई काम पसन्द नहीं, उनके लिए देवात्मा के सम्बन्ध में किसी प्रकार के साधनों की सिरे से ही कोई विधि नहीं हो सकती। हां, जो लोग इस पतन की भयानक अवस्था में पहुंच कर देवात्मा के देव प्रभावों को पाने का अधिकार ही खो चुके हैं, वे उनके सम्बन्ध में कोई और किसी प्रकार का हितकर साधन करने के योग्य नहीं रहे। बाकी जो अधिकारी हैं, जो अभी तक इस हालत में है कि उन तक देवात्मा को देव ज्योति और उनके देव तेज की कुछ किरणें पहुंच सकती हैं, उनके लिए ज़रुरत है कि वे इन दिनों में विशेष रुप से देवात्मा की रची हुई अति हितकर पुस्तकों का श्रद्धा पूर्वक पाठ करें। वे देवात्मा के देवरुप की प्रकाशक पुस्तकों का अध्ययन करें। वे आत्मा के विषय में देवात्मा की शिक्षा का पाठ करें और उस पर विचार करें वह देवात्मा की जीवन कथाओं का पाठ करें और उन पर विचार करें। ऐसा करने से उन तक देवात्मा की देव ज्योति पहुंचने पर उन्हें देवात्मा के देव रुप अपनी आत्मा की असल हकीकत के विषय में एक या दूसरे प्रकार के छुपे हुए सत्य नज़र आ सकते हैं।

दूसरा उपाय यह है कि जहां कहीं इन विषयों में सम्मिलित साधन होते हों, और जिनमें देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज का कुछ भी कार्य होता हो, वहां, श्रद्धापूर्वक बैठने और उनके देव प्रभावों को कुछ न कुछ पाने से आत्मिक हित हो सकता है। लेकिन यह बात अच्छी तरह से याद रखो कि क्या अपने निज के पाठ और विचार से और क्या सम्मिलित साधन से लाभ उठाने के लिए प्रत्येक जन के लिए श्रद्धावान और ऐसे किसी साधन का आकांक्षी होना अत्यन्त आवश्यक है। घृणा करने वाले और श्रद्धावान जनों के लिए धर्म जगत के सब दरवाजें बन्द हैं।

श्रद्धावान के क्या अर्थ? यह कि वह देवात्मा के मुकाबले में अपने आप को बढ़िया न समझते हों, बल्कि अपने आप को देवात्मा और उनके देव प्रभावों का सच्चा मोहताज अनुभव करते हों और दीन भावी होकर अपने आत्मिक शुभ के आकांक्षी हों। जो जन नीच घृणा से भरा हुआ है, घमण्ड से अकड़ रहा है, अपने आप को देवात्मा का मोहताज और उन्हें अपने उद्धार कर्ता और अपने आपको देवात्मा का मोहताज और उन्हें अपने उपकार कर्ता और जीवन दाता के रुप में उपलब्ध नहीं कर सकता, उस तक उनकी देव ज्योति और उनके देव तेज की किरणें नहीं पहुंच सकतीं।

तब अति आवश्यकता है कि तुम सच्चे श्रद्धावान और अपने आत्मिक हित के सच्चे आकांक्षी बनों। अपने आपको देवात्मा का सचमुच मोहताज महसूस करो और दिल की ऐसी हालत को प्राप्त होकर क्या अपने निज के

साधन और क्या सम्मिलित साधन पूरे करो। तब निश्चय तुम्हारी अपनी–अपनी योग्यता के अनुसार देवात्मा के सम्बन्ध में आज से जो वार्षिक साधन आरम्भ होते हैं, वे तुम्हारे लिए फलदायक हो सकते हैं।

अन्त में परम पूजनीय भगवान् ने सच्ची सात्विक श्रद्धा और सच्चे सात्विक सम्मान की महिमा और उसकी अति आवश्यकता को अपने दिल के गहरे भावों से हमारे सम्मुख प्रकट किया और उसके सिलसिले में जहां यह बतलाया कि वे किस प्रकार अपने घर पर आने वाले भद्रजनों को सम्मान देते हैं, वहां बहुत भरे दिल से फरमाया कि किस तरह उन्होंने देवात्मा होकर भी अपने पिता जी के पांव के अंगूठे को धोकर उसका चरणामृत लिया है और उन्होंने अपना जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद भी अपने माता जी के चरणों में गिर कर और साष्टांग प्रणाम करके उनके सम्बन्ध में अपने हृदय के गहरे सम्मान भाव का प्रकाश किया है। इसी क्रम में भगवान ने फरमाया– कि यदि एक जन इसी प्रकार अपनी माता के चरणों में गिर कर उनके सम्बन्ध में सम्मान प्रदर्शन कर रहा हो और उसका घमण्डी और आत्मा के लिहाज़ से अन्धकार ग्रस्त बेटा उसके पास खड़ा तमाशा देखता हो और वह अपनी दादी को कुछ भी सम्मान न देता हो, या न देना चाहता हो, तब वह अपनी इस बुरी क्रिया से केवल अपनी दादी का ही अपमान नहीं करता, परन्तु अपने पिता का भी घोर निरादर करता है, और अपने आप को बहुत नालायक प्रमाणित करता है, और यदि उसके पिता के भीतर और उच्च भावों को छोड़कर केवल आत्म सम्मान का भाव ही विद्यमान हो, और वह अपने बेटे का दास न हो, तो वह उसे किसी प्रकार सहन नहीं कर सकता। लेकिन ऐसे बाप देव समाज में मौजूद हैं कि जिनके बेटे उनके गुरु को सम्मान देना नहीं चाहते, और वे प्रसन्न रहते हैं, वे अपना अपमान सहते हैं। गुरु का अपमान सहते हैं, लेकिन अपने बेटे के गुलाम होने के कारण कोई उचित क्रिया नहीं कर सकते। अफीका से जो हब्शी लोगों को पकड़कर गुलाम बना लेते थे, वह गुलामी तो चली गई है, लेकिन यह गुलामी अभी लाखों घरों में मौजूद है।

भगवान का यह ब्यान विशेषकर अति ज़ोरदार और प्रभावशाली था। इसका बहुत से दिलों पर अजीब जादू का सा असर हुआ, और एक जन तो इससे प्रभावित होकर बेबस फूट पड़े।

इसके अतिरिक्त भगवान ने देव समाज से सम्बन्धित जनों का इस ओर भी विशेषता से ध्यान फेरा कि वे महोत्सव से पहले बिना किसी तकाज़े के अपने–अपने ज़िम्में का बकाया नियत दान या वादा दान या अखबारों और पुस्तकों आदि की कीमत की रक़म अदा कर दें और यह भी फरमाया कि जो जन इन दिनों में देव समाज की एक या दूसरे पहलू में सेवा कर सकते हों, वो उसकी उत्साह के साथ सेवा करें और इस सेवा के द्वारा भी इन दिनों का विशेष तौर से सफल करें।

(''जीवन तत्व'' 15 नवम्बर 1927)

शोक समाचार

बहुत शोक कि हमारे पुराने साथी सेवक श्रीमान गवर्धन दास जी मोगा का 30 नवम्बर 2013 की सुबह दिल का दौरा पड़ने से अचानक देहांत हो गया। उनकी पत्नी और बच्चों पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। हम उनके वा अन्य परिवारिक जनों के दुख में शरीक होते हैं और उनकी परलोक में रक्षा वा सहायता की कामना करते हैं।

–बलदेव सिंह

सच्चे उपास्य देव भगवान देवात्मा

मैं क्यों भगवान देवात्मा को अपना सच्चा उपास्य देवता मानता हूं, और क्यों सदा उनके दर का भिखारी बना रहना चाहता हूं?

इसलिए कि –

1. किसी सच्चे उपास्य देव में जिन सच्ची और सर्व्वोच्च विशेषताओं का वर्तमान होना आवश्यक है, वह सब विशेषताएं केवल एकमात्र भगवान देवात्मा में ही पाई जाती हैं। और उन के सिवाए और किसी भी मनुष्य या किसी कहलाने वाले ईश्वर, परमेश्वर वाहगुरू, अल्ला, ख़ुदा, गाड या उसके किसी अवतार पीर पैग़म्बर, हादी गुरू, रहनुमा, वली, सन्त, महन्त, सिद्ध, बुद्ध, तीर्थङ्कर आदि में नहीं पाई जातीं। ऐसी सर्वोच्च विशेषताओं वाला अस्तित्व देवात्मा के सिवाए न कोई पहले था, न अब है, और न आयन्दा हो सकता है। अर्थात् यह कि एक ओर वह सब सुख विषयक सब प्रकार के नीच अनुरागों और उनसे उत्पन्न नीच घृणा की महा विनाशकारी शक्तियों से पूर्णत: रहित हैं, और दूसरी ओर वह सब प्रकार के हित और सब प्रकार के सत्य की पूर्णाङ्ग अनुराग और सब प्रकार के अहित और सब प्रकार की मिथ्या के लिए पूर्णाङ्ग घृणा की अद्वितीय शक्तियों से विभूषित सच्चे देवता वा देवात्मा हैं, और वही एक मात्र रूहानी जगत् के सच्चे सूर्य्य, सच्चे धर्म शिक्षक और अधिकारी आत्माओं के सर्वाङ्ग कल्याण कर्त्ता हैं।

2. मेरे अस्तित्व में जो मुख्य और मूल वस्तु मेरा आत्मा है, जिसको लेकर ही मेरे सब सुख, मेरे सब सम्बन्ध, मेरे सब लाभ, और मेरी सारी ज़िन्दगी है, और उसके विषय में सत्य ज्ञान का पाना और जहां तक सम्भव हो उसकी पतन और विनाश से रक्षा करना और उसका अधिक से अधिक विकास करना, मेरा मुख्य कर्त्तव्य है। मेरी यह मुख्य आवश्यकता जिस देव ज्योति और उस देव तेज की प्राप्ति से पूरी हो सकती है, उस देव ज्योति और देव तेज के भंडार यही एक मात्र भगवान देवात्मा ही हैं। उनके सिवाए मेरे जीवन की यह मुख्य आवश्यकता और किसी अस्तित्व के द्वारा न पहले पूरी हुई और न आयन्दा पूरी हो सकती है।

3. भगवान देवात्मा मेरे आत्मा के लिए जान और प्राण के सम्बन्धी हैं। वह मेरी योग्यतानुसार सच्चे अर्थों में मेरे लिए सर्वाङ्ग कल्याणकर्त्ता वा मेरे परम उपकारी हैं। जैसे अब तक कोई और वजूद उनके समान मेरा हितकर्त्ता सम्बन्धी प्रमाणित नहीं हुआ, वैसे ही आयन्दा भी नहीं हो सकता। अर्थात्

(1) उन्होंने मुझे नाना प्रकार के पाप कर्मों से बचाया है, और मुझे काम अनुराग, स्वाद अनुराग, आलस्य अनुराग और अहं अनुराग के महा नीच भावों की भयानक दासत्व से एक बड़ी सीमा तक स्वतन्त्र कर दिया है। और इन नीच भावों में से अभी तक जिस जिस का जहां तक मुझ पर अधिकार बाक़ी है, उसके विषय में सच्चा बोध जागृत करके उससे मुक्ति लाभ करने के सच्चे साधनों वा संग्राम में लगा दिया है।

(2) उन्होंने मुझे महा हानिकारक आत्म अन्धकार और नाना प्रकार के मिथ्या विश्वासों से मोक्ष दी है।

(3) उन्होंने मुझे आत्मा वा सत्य धर्म और मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य के विषय में दुर्लभ सत्य ज्ञान प्रदान किया हैं

(4) उन्होंने मुझे ऐसी उमर में ही अपनी शरण में आने का उच्च अधिकार प्रदान किया, कि जिसमें अभी तक मेरे भीतर धन अनुराग और सन्तान अनुराग आदि कई नीच अनुराग पैदा ही नहीं हुए थे। और उनकी ही अपार कृपा से मैं आयन्दा भी उन नीच अनुरागों में फंसने से बच गया।

(5) उन्होंने मेरे भीतर हानि परिशोध विषयक उच्च भाव जागृत करके मुझे कई प्रकार के पाप कर्मों के विकारों से मोक्ष दी है और आयन्दा भी इस भाव के द्वारा पवित्र होने के मार्ग पर डाल दिया है।

(6) उन्होंने मेरे भीतर आत्मा के विषय में

मानसिक बोध उत्पन्न करने के अतिरिक्त एक सीमा तक हार्दिक उच्च बोध भी उत्पन्न किया है और मुझे इस उच्च बोध को बढ़ाने वाले सच्चे साधनों और संग्राम में लगा दिया है।

(7) उन्होंने मुझे अपने सर्वोच्च देव रूप का नाना अङ्गों में एक सीमा तक सच्चा दर्शन करने का अधिकारी बनाया है और मेरे भीतर अपने प्रति एक सीमा तक अटल श्रद्धा, विश्वास, कृतज्ञता और आकर्षण के उच्च भावों को जागृत करके मेरे लिए बेबहा बरकतों का भण्डार खोल दिया है। और मुझे इन अति उच्च भावों के बढ़ाने के संग्राम और साधनों में लगा दिया है।

(8) उन्होंने मेरे भीतर एक सीमा तक शिष्टाचार विषयक नाना बोध, कर्त्तव्य पालन, सत्य भाषण, सत्य प्रतिज्ञा पालन और अन्य अधिकारी आत्माओं तक उनके अद्वितीय देव प्रभावों को पहुंचाकर उनके आत्माओं का हित साधन करने का भाव जागृत कर दिया है और इन उच्च भावों को अधिक से अधिक बढ़ाने के संग्राम और साधनों में प्रवृत कर दिया है आदि आदि।

इन सब आत्मिक महा दुर्लभ और अत्यन्त मूल्यवान उपकारों के सिवाए उनकी कृपा से मुझे अपनी शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक उन्नति, माली बेहतरी और पारिवारिक जीवन के उचित सुख की प्राप्ति आदि नाना विषयों में जो और कई प्रकार के महा उपकार लाभ किए हैं और उन्होंने मेरी सच्ची इज्ज़त को जिस क़दर बढ़ा दिया है, उसकी अलग बहुत लम्बी और बहुत शिक्षाप्रद और भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की निराली विशेषता को प्रगट करने वाली कथा है, कि जिसे यहां पर ब्यान करने की गुंजायश नहीं है।

4. उन्होंने मुझे ऐसे सर्वोच्च कार्य में सेवाकारी होने का महा सौभाग्य अता किया है कि जो कार्य इस दुनियां में सब से मुख्य, सब से उच्च और सब से आवश्यक और कुल कामों की जान और बुनियाद है और जिसमें सेवाकारी बनने से मेरी तुच्छ ताकतों की जितनी सच्ची सफलता और मेरे जीवन की जितनी रक्षा और उन्नति है, उतनी सफलता, रक्षा और उन्नति और किसी भी कार्य में सेवाकारी होने से नहीं हो सकती।

5. उन्होंने अपने सर्वोच्च देव रूप का दर्शन कराने वाली सत्य धर्म विषयक शिक्षा देने वाली बहुत सी दुर्लभ और अत्यन्त कल्याणकारी पुस्तकें मुझे प्रदान की हैं, कि जिनको मैं अपने पास अपने आत्म कल्याण के लिए बेहद क़ीमती ख़जाना अनुभव करता हूं और उनके श्रद्धा और विचार पूर्वक पाठ से एक एक बार इस क़दर कृतार्थ होता हूं, कि जिसका कुछ ब्यान नहीं हो सकता।

6. उन्होंने मेरे लिए मेरी ज़िन्दगी के महा कठिन मार्ग में सच्ची सहायता देने वाले मेरे कितने ही सच्चे साथी वा धर्म सम्बन्धी पैदा कर दिए हैं।

7. उन्होंने इस दुनियां में पूर्णत: निराली धर्म समाज अर्थात् देव समाज स्थापन करके मुझे उसका अङ्ग बनने का महा सौभाग्य अता किया है।

8. उन्होंने मुझे कई प्रकार के अनुचित और महा हानिकारक दुखों से बचा लिया है और कई प्रकार के उचित और कल्याणकारी सुखों का भागी बना दिया है और आयन्दा के लिए अधिक से अधिक उच्च सुखों के लाभ का मार्ग खोल दिया है और मेरी आयु को बढ़ा दिया है।

तब ऐसे सर्वोच्च देव रूप के रखने वाले और अपने परम उपकारी भगवान देवात्मा के सिवाए मैं और किस को अपना सच्चा उपास्य देवता जानूं और मानूं। और किसके दर का सदा भिखारी रहना चाहूं? निश्चय उनके सिवाए मेरा और किसी और मनुष्य का कोई सच्चा उपास्य देव नहीं था, नहीं है, और नहीं हो सकता। यही कारण है कि मैं झूठे उपास्य देवों के पंजे से निकल कर और सच्चे उपास्य देव को लाभ करके अपने लिए क्या जिस्मानी, क्या मानसिक और क्या आत्मिक - सारांश यह कि सब पहलुओं में इस क़दर बेबहा बरकतों का भण्डार खुला हुआ पाता हूं, और अपने इस क़दर धन्य भाग्य अनुभव करता हूं, कि जिसकी कोई हद नहीं। निश्चय मैं अपने सामने बेहद उच्च बरकतों का भण्डार खुला हुआ देखकर और उन बरकतों के लाभ करने के मार्ग पर पड़ने का सौभाग्य पाकर अपने आप को इस दुनियां के बड़े बड़े विद्वानों, दौलतमन्दों, राजाओं और महाराजाओं आदि से

बहुत अधिक सौभाग्यवान अनुभव करता हूं। और आत्मिक हित के सिवाए नाना प्रकार के उच्च सुखों को भी अजीब तरह से सम्भोग करता हूं। ऐसी अवस्था को पाकर मैं कई बार सोचने लग जाता हूं, कि कहां मैं और कहां मुझ तुच्छ को सारी दुनियां के सरताज भगवान देवात्मा की प्राप्ति और उनके देव प्रभावों को लाभ करके सच्चा धर्म जीवन लाभ करने के मार्ग पर पड़ने और उसके नायाब उच्च सुखों को पाने का उच्च अधिकार वा महा सौभाग्य!! मेरी अब बार बार यही कामना है, कि मेरे लिए इस महा सौभाग्य को जहां तक अधिक से अधिक सफल करना सम्भव है, वहां तक उसे सफ़ल बना सकूं और हर हाल में और सारी उमर अपने सच्चे उपास्य देव परम हित कर्त्ता भगवान देवात्मा के लिए वफ़ादार रह सकूं और मेरे सिवाए और भी अधिक से अधिक अधिकारी जन इस महा सौभाग्य को प्राप्त करके अपना परम कल्याण साधन कर सकें।

भगवान देवात्मा का एक बहुत बहुत उपकृत सदा उनके दर का भिखारी रहने का आकांक्षी, उनका नाचीज़ उपासक और सेवक।

धर्म बल

(आत्मिक पतन और जीवन 10 दिसम्बर 1929)

एक नए युग के उत्पन्न कर्त्ता भगवान् देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव

1. मनुष्य जगत की असभ्य अवस्था

नेचर के विकास क्रम में मनुष्य का प्रकाश पशु जगत् से ही हुआ है। यद्यपि मनुष्य विकास क्रम में अपनी विशेष शारीरिक गठन और उन्नतशील बुद्धि और वाक शाक्ति को प्राप्त होकर पशु जगत से भिन्न और एक नई श्रेणी का जीव उत्पन्न हुआ है, और उस की इस विशेषता के कारण पशु और मनुष्य में मूल अन्तर उत्पन्न हो गया है। परन्तु मनुष्य के धीरे-धीरे अपनी उक्त विशेषताओं में उन्नत होकर इस पृथ्वी पर जो 2 आश्चर्य जनक लीला प्रगट की है, जो 2 करिश्मे दिखाए, और जिस प्रकार का सुन्दर और हितकर रूप भौतिक जगत्, उद्भिद् जगत्, पशु जगत् और मनुष्य जगत् को दिया है, और उनके लिए जिस-जिस प्रकार के सुखों और अन्य कीमती बरकतों का द्वार खोल दिया है, वह पशु जगत् के किसी बड़े से बड़े जीवधारी के स्वप्न में भी नहीं आ सकता था और न आ सकता है। हां, पशु जगत का कोई जीवधारी अपनी तुलना में मनुष्य की इन विशेष शक्तियों और उनकी विचित्र लीला को भी देखने के पूर्णातः अयोग्य है, परन्तु यह भी सच है, कि मनुष्य एक लम्बे काल तक बहुत कुछ असभ्य अथवा जङ्गली अवस्था में रहा है इसके विषय में पूजनीय देव शास्त्र खगड 3 पृष्ट 544 में इस प्रकार लिखा है :-

"एक बड़े लम्बे काल तक मनुष्य इतना जंगली था, कि वह नर नारी के सम्बन्ध में भी परस्पर के जोड़े के बन्धन से भी नहीं बन्धा था। फिर जब उस में नर नारी विषयक कई प्रकार के सुखों का आकर्षण बढ़ा और उस ने धीरे-धीरे पारिवारिक जीवन ग्रहण किया, और अन्य बातों के भिन्न सन्तान पालन के सम्बन्ध में भी उस की सोच विचार आदि मानसिक शक्तियों पर अधिक बोझा पड़ा, तब उस की कुछ और उन्नति हुई। इसी प्रकार उस के एक वा दूसरे प्रकार के दुख ने भी उस की कई प्रकार की शक्तियों को कुछ-कुछ हिलाने और धीरे-धीरे उन की उन्नति में कुछ न कुछ सहायता की।. . . .. हज़ारों वर्षों तक मनुष्य न आग जलाना जानता था, न कोई कपड़ा बनाना जानता था, न कोई कपड़ा पहनता था, न किसी ध

ातु को ज़मीन से निकालना और उसकी कोई वस्तु बनाना चाहता था, न वह कोई गांव वा नगर रखता था, न कोई दुकान करता था, न कोई और व्यवसाय करता था, और न लिखना पढ़ना जानता था, किन्तु प्रायः बहुत से जंगली पशुओं की न्याई अपना जीवन रखता था।"

यह मनुष्य की आरम्भ की असभ्य अथवा जंगली अवस्था का प्रमाण है।

2. मनुष्य में सुख अनुरागों का बढ़ना और उस का अपने साथी मनुष्यों आदि पर अन्याय और अत्याचार करना

मनुष्य ने अपनी जीवन यात्रा करते हुए ज्यों-ज्यों अपने एक वा दूसरे सुख कर भाव की तृप्ति करने का यत्न करना शुरू किया, त्यों-त्यों उस के भीतर उन सुखों को बार-बार लाभ करने की लालसा भी बढ़ती गई। इस से जहां उस की सोच विचार आदि मानसिक शक्तियों की उन्नति का अपेक्षाकृत अधिक पथ खुला। वहां उस की नाना सुख लालसाएं भी बढ़ने लगी, और धीरे-धीरे नाना प्रकार के सुख अनुरागों के रूप में परिणित हो गई। इन सुख अनुरागों के परिचालन से बेशक उसकी कई प्रकार की उन्नति भी हुई, लेकिन वह अपनी कई एक सुखों की लालसाओं के बढ़ने स

धीरे-धीरे नीच भी बनता गया, और एक-एक सुख के पीछे इस कदर पागल हो गया, कि वह अपने नाना कर्मों के विचार से पशुओं की तुलना में भी अत्यन्त नीच बन गया।

मनुष्य को ऐसी अन्धता और अबोधता की अवस्था में न अपने नफ़े और नुकसान का विवेक और बोध था, और यदि किसी विषय का विवेक भी था तो नीच सुखों के दासत्व के कारण अपहरणकारी गतियां करने के लिए लाचार था। ऐसी सूरत में एक ओर भीतर की प्रबल सुख अनुराग मूलक शक्तियों से उसका नाना सम्बन्धों में मिथ्या और अशुभ की गतियाँ करना जरूरी था, और दूसरी ओर अपने और दूसरों के सम्बन्ध में अपहरणकारी बनना भी अनिवार्य था। इन नीच सुख अनुरागों के दास और उच्च भावों से वंचित मनुष्य ने अपनी अपहरणकारी गतियों से अपने साथी मनुष्यों और अन्य अस्तित्वों पर क्या कुछ अन्याय और अत्याचार करना शुरू किया, उस के विषय में उक्त अद्वितीय ग्रंथ के पृथ्ठ 546 पर इस प्रकार लिखा है :-

"पशु जगत् के प्रति कई प्रकार के अत्याचारों को छोड़कर मनुष्य के द्वारा उस के अपने जगत् के सम्बन्ध में जितना अत्याचार हुआ है, हत्याएं हुई हैं, जितना अपहरण हुआ है, निर्बल स्त्रियों पर अन्याय हुआ है, सबल पुरुषों ने निर्बल पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को बलात् पकड़ 2 कर उन्हें दास वा गुलाम बनाया है, उन्हें पशुओं की न्याई औरों के हाथों में बेचा और इस गुलामी का व्यवसाय करके धन कमाया है; नाना प्रकार के मिथ्या और महा हानिकारक ध र्म मतों का प्रचार किया हैं, और झूठे धर्म मतों का विश्वासी बन जाने पर नाना देशों के लोगों ने अपने जैसा धर्म मत न रखने वालों को जिस-जिस प्रकार से उत्पीड़ित किया है, उन्हें जीता हुआ अग्नि में डालकर जलाया है, उन्हें अन्य नाना विधियों से सताया और तड़पाया है, उन की हत्याएं की हैं, एक वा दूसरे प्रकार के कहलाने वाले देवतों परन्तु वास्तव में प्रेत आत्माओं के चाहने पर उन के आगे पशुओं के भिन्न मनुष्यों के भी गले काट कर उन के रुधिर की उन्हें बलियां दी हैं. एक वा दूसरे कहलाने वाले देवताओं के आदेश मानकर अपने से भिन्न सम्प्रदायों के अनुयाईयों के साथ अन्याय-मूलक युद्ध किया है, ऐसे युद्धों में एक ओर के जनों ने दूसरी ओर के जनों पर जय लाभ करने पर उनके गावों को लूटा है, उन्हें आग लगाकर फूंका है, उनकी स्त्रियों और बच्चों को दास बनाने के भिन्न सती स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट किया है, पतियों के मर जाने पर विधवा स्त्रियों का माल ले लेने के निमित्त उन में यह मिथ्या विश्वास उत्पन्न करके, कि जो विधवा अपने मरे हुए पति के साथ चिता में बैठकर आप भी जल जाती है, न केवल वह स्वर्ग को जाती है, किन्तु अपने पति को भी स्वर्ग में ले

जाती है, उन के पतियों के मृत देह के साथ उन की पत्नियों को भी अग्नि में दग्ध किया है; स्त्रियों और अन्य हज़ारों जनों को घटिया बताकर उन्हें उन की मानसिक उन्नति से वंचित किया है, पुरुषों ने विधवाओं को उचित रूप से पुनर्विवाह करने से रोका और बन्ध किया है, और अपने काम सुखादि की प्राप्ति के निमित अपने लिए बहुत से विवाहों की प्रथा जारी की है; घमंड और घृणा भाव से परिचालित होकर लाखों और करोड़ों जनों को प्रकारण अपनी अपेक्षा घटिया कहकर उन्हें अस्पर्श्य अथवा अछूत बताया और उनके प्रति कई प्रकार का अत्याचार किया है; परस्पर के सम्बन्ध में कई प्रकार के पूर्णात: मिथ्या भेदों का प्रचार किया है, धन, सम्पति, पद और राज्य के लालच का दास बन जाने पर उन की प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के अत्याचारों का पथ ग्रहण किया है: राज्य पाने पर अपनी-अपनी पतित प्रकृति के अनुसार महा भयानक दण्ड विधियां नियत की हैं; अपने आहार और अन्य सुखों की प्राप्ति के लिए पशु जगत् के नाना प्रकार के जीवों की हत्या विशेष वा उचित बताई है, और इसी प्रकार के अन्य महा अत्याचार-मूलक कर्मों का प्रचार किया है, उन का मनुष्य जगत् के लिखे हुए इतिहास से भी प्रमाण मिलता है।"

ओह! मनुष्य के नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं की गुलामी की कैसी अत्यन्त शोचनीय, अन्धकार मय, भयंकर और कितनी महा राक्षसी छवि!

3. मनुष्य सभ्यता में उन्नत होकर भी सुख परायण ही बनता गया

मनुष्य जगत के क्रमश: परिवर्तन से जब कितने ही मनुष्यों ने यह जाना, कि नेचर ही उन के कई प्रकार के सुखों का भंडार है, उसके नाना पदार्थों और नाना शक्तियों में उन के सुखों की सामग्री है, और उनके विषय में लाभ करने की आकांक्षा उन में जाग्रत हुई और धीरे-धीरे बढ़ी, तब कई देशों के मनुष्यों ने कल्पना मूलक विधियों से ठीक काम निकलता न देखकर उन्हें धीरे-धीरे त्याग कर दिया, और नेचर के विषय में ठीक ज्ञान लाभ करने के लिए ठीक विधि मालूम और ग्रहण की, इस से मनुष्यों के लिए एक बिल्कुल नए वैज्ञानिक ज्ञान की उन्नति का पथ खुल गया और इस के द्वारा विविध प्रकार के नए सुखों का एक नया युग शुरू हुआ।

इस से मनुष्य ने नेचर के नाना पदार्थों और शक्तियों को अपने अधिकार में लाकर अपने लिए नए-नए सुखों को प्राप्त किया, जो पहले मनुष्य जगत् के लोगों को कभी प्राप्त न थे। इसी क्रम में मनुष्य ने मशीनरी वा कला कौशल की उत्पत्ति करके जहां अपने सुख अनुरागों को बढ़ाया, वहां उस ने शिल्प और वाणिज्य विषयक कार्य में भी बहुत उन्नति लाभ की और विविध अङ्गों में अपने साथी मनुष्यों के कुछ अधिकारों को स्वीकार किया, जिन्हें वह पहले स्वीकार नहीं करता था, और परस्पर की लड़ाइयों और अपराध विषयक दण्ड विधियों में भी बेहतर परिवर्तन उत्पन्न हुआ, और पहली अत्याचार-मूलक विधियां दूर हुई। इस से परस्पर के सम्बन्धों में कई प्रकार की शान्ति और उन्नति का मार्ग भी कुछ और खुला। और मनुष्य पहले की अपेक्षा अधिक सुसभ्य हुआ, मनुष्यों ने सुख दुख के आधार पर सभ्यता उत्पादक जिस-जिस विषय में जितना-जितना उच्च परिवर्तन लाभ किया, वह नेचर के विकासकारी कार्य की निश्चय एक विचित्र और मनोहर छवि है, परन्तु मनुष्य जगत के इस प्रकार सुसभ्य बनते जाने पर भी उस की सुख परायण मूल प्रकृति में कोई अन्तर नहीं आया। यह 'मौज बहार' के जीवन का प्रेमी होता गया। उस की नाना सुखों के सम्भोग करने की लिप्सा दिनों दिन बढ़ती गई। अर्थात् वह दिनों दिन धन सम्पति, अपनी सन्तान, अपने खान पान, अपने मान, अपनी बड़ाई, निर्बलों पर अपने आधि-पत्य, राज्य और पद और भोग विलास और उनके देने वाले सामानों और सम्बन्धियों का दास भी अधिक बन गया। और इन नीच अनुरागों के बढ़ते जाने से मनुष्यों के आत्मा दिनों दिन घोर आत्म अन्धकार ग्रस्त, कठोर, उल्टा दृष्टा, अनुचित दुखों

के भागी और विनाश पथ गामी बनते गए। एक ओर वह अपनी इस अत्यन्त असहाय और मदद की मुहताज आत्मिक अवस्था का कोई ज्ञान वा बोध नहीं रखते थे, इसलिए उस से मोक्ष पाने और आत्मिक उच्च बोध लाभ करने की कोई आकांक्षा नहीं करते थे, और दूसरी ओर धर्म के नाम से जिस-जिस प्रकार के मिथ्या साधन, वा पूजा, पाठ, जप तप वा संध्या आदि करते थे, जिन मिथ्या देवी देवतों वा उपास्यों के पुजारी बने हुए थे, और जिस मिथ्या लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह सब कुछ करते थे, उस से आत्मिक जगत के अटल नियमानुसार सिर्फ यही नहीं कि वह अपने आत्मा के रूप और उसके जीवन के विषय में कोई सत्य ज्ञान और बोध न पाते थे, और बिना देव ज्योति की प्राप्ति के पा भी नहीं सकते थे। किन्तु पहले से भी अधिक अन्धकार ग्रस्त, कठोर और अयोग्य वा अनअधिकारी बनते जाने के लिए मजबूर थे। ऐसी महा शोचनीय और अत्यन्त असहाय दशा में मानों कुल जगतों की ओर से ही यह पुकार उठ रही थी, कि कोई हमारा परम रक्षक और नेता, परम विकासक वा सर्व्व हित सम्पादक उत्पन्न हो, और वह हमारी सुध ले और हमें अज्ञान, मोह, पाप, दुख और अशान्ति से निकाल कर सत्य ज्ञान वा उच्च बोध और सच्चा सुख वा शान्ति प्रदान करे।

4. आत्मिक जगत् के सूर्य भगवान देवात्मा का आविर्भाव

नेचर के विकास क्रम में जैसे और जगतों में धीरे-धीरे हितकर से हितकर परिवर्तन आता और विकास होता गया है, वैसे ही उसी अटल नियम के अनुसार ठीक समय के आने पर मनुष्य जगत में से सब प्रकार की मिथ्या और अशुभ को नष्ट करने और सब प्रकार के सत्य और शुभ का राज अथवा देव राज स्थापन करने के लिए **आत्मिक जगत के सूर्य भगवान देवात्मा का आविर्भाव हुआ है।** इस अद्वितीय और पूर्णात: अनोखे आविर्भाव के विषय में पूजनीय देव शास्त्र के खण्ड 3 पृष्ठ 563 पर इस प्रकार ब्यान किया गया है :-

"मनुष्य जगत की इस नितान्त अन्धकार ग्रस्त, महा अबोधी, महा पतित और महा हानिकारक दशा में उच्च परिवर्तन लाने और उस में एक पूर्णात: नए और शुभ युग की उत्पत्ति करने के लिए उसी मनुष्य जगत् से ही, परन्तु उस से ऊपर जिन सच्ची और अद्वितीय देव शक्तियों से विशिष्ट देवात्मा के आविर्भाव की आवश्यकता थी, उन सच्ची और अद्वितीय देव शक्तियों से विभूषित देवात्मा का आविर्भाव हुआ, और उनके इस आविर्भाव से मनुष्य जगत् के विकास में उस पूर्णता: नए युग का आरम्भ हुआ, कि जिस का उत्पन्न होना नेचर के विकास क्रम में आवश्यक था।"

निश्चय इस अद्वितीय और पूर्णता: अनोखे आविर्भाव के होने पर

1) मिथ्या उपास्यों के स्थान में मनुष्य मात्र को एक मात्र सत्य उपास्य वा देवात्मा गुरु प्राप्त हुए,

2) पहले जो आत्मिक जगत् में अन्धकार की काली घटा छाई हुई थी, उस के स्थान में सत्य ज्योति का प्रकाश हुआ,

3) आत्मा और सत्य धर्म के सम्बन्ध में जो नाना प्रकार के मिथ्या विश्वास और मत फैले हुए थे, उस के स्थान में नेचर सम्मत विज्ञान मूलक सत्य धर्म और उस के तत्वों और साधनों की अद्वितीय शिक्षा मिली; जिस से मज़हबी दुनिया का सारा तख़्ता पलट गया,

4) परस्पर के सम्बन्धों में से अनुचित दुख और हानिकारक अन्मेल के दूर होने और हितकर सुख और हितकर मेल के आने की अनोखी साधन प्रणाली प्रचलित हुई और सर्वाहित का कार्य आरम्भ हो गया।

भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का मनुष्यात्माओं में अनुपम कार्य

1) भगवान देवात्मा क्योंकि देव शक्तियों से विभूषित पूर्ण गठन प्राप्त देवरूप रखते हैं, और देव जीवनधारी हैं, इसलिए वह मनुष्य मात्र का सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं, अपूर्ण गठन प्राप्त मनुष्यात्मा अपनी इस निम्न प्रकृति के कारण इस योग्य ही नहीं हैं, कि वह भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर भी सर्व्वाङ्गों में विकास लाभ कर सकें। वह अपनी आत्मिक पूंजी की अवस्था के अनुसार अपना विकास साधन कर सकते हैं, उस से अधिक नहीं। फिर भी एक-एक अधिकारी आत्मा नाना अङ्गों में भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर उन्नति करता और कर सकता है। क्योंकि भगवान देवात्मा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं। इसलिए किसी अधिकारी मनुष्य का एक पहलू में, और किसी दूसरे का दूसरे अङ्ग में और किसी का तीसरे अङ्ग में, इत्यादि-इत्यादि भला होता है। यही कारण है, कि जब देव प्रभाव दायक मंडल में नाना जन वास करने का सौभाग्य पाते हैं, तब उन के भाव प्रकाश से यह साफ प्रगट होता है, कि सब को एक ही प्रकार का लाभ नहीं हुआ, किसी को काम वासना का अधिकार बुरा नज़र आया, किसी को धन अनुराग की गुलामी बुरी मालूम हुई, किसी को मान बड़ाई का अधिकार बुरा लगा, किसी को स्वार्थ बुरा नज़र आया आदि। अब देव प्रभावों का मंडल तो सब के लिए एक ही था, परन्तु भाव प्रकाश अलग-अलग क्यों हो गए? वह इसलिए कि देव प्रभाव तो हमारा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने की सामर्थ्य रखते हैं; यह हमारी आत्मिक पूंजी की कमी है, और हमारे भीतर वह सामर्थ्य नहीं, कि हम सर्व्वाङ्गों में अपना कल्याण साधन कर सकें। मनुष्य अपनी अधूरी प्रकृति से लाचार है, परन्तु वह अपनी अधूरी प्रकृति से भगवान् देवात्मा के कार्य को अधूरा नहीं कर सकता। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का कार्य तो पूर्णाङ्ग हित साधन करने का कार्य है, इस सत्य को हमें बार-बार उपलब्ध करने की आवश्यकता है।

2) चूंकि भगवान् देवात्मा हमारा सर्व्वाङ्गों में हित साधन करने वाले हैं, इसलिए उनके देव प्रभावों से अधिकारी मनुष्यों में नाना प्रकार का उच्च परिवर्तन नज़र आता है। अब यह नाना अङ्गों में भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का जो विचित्र कार्य है, उन सब में एक बात जरूर ऐसी पाई जाती है, जो अत्यन्त विचित्र है, वह बात यह है, कि देव प्रभावों में सांस लेने वाला जन नाना सम्बन्धों में कम हानिकारक और नाना सम्बन्धों में अधिक से अधिक हितकर बनने के मार्ग पर पड़ जाता है। वह अपनत्व से निकल कर कुछ पर की तरफ जाना शुरू करता है, यह बुनियादी तबदीली धर्म मार्ग पर चलने के लिए अत्यन्त आवश्यक है, इस बुनियादी तबदीली से ही अधर्म जीवन का क्रम बन्द होना शुरू हो सकता है। और धर्म जीवन का क्रम आरम्भ हो सकता है। जहां अपनत्व या स्वार्थ है, वहां पाप है। जहां पर है वहां धर्म है। अब इस पर के सम्बन्ध में इस निम्न परिवर्तन से भी मनुष्यात्माओं का नाना अङ्गों में कल्याण साधन होता है। इस पर के पथ पर चलने से मनुष्य शिष्टाचारी हो जाता है। और शिष्टाचारी होने से वह अपनी कीमत बढ़ा लेता है। वह उठना बैठना जान लेता है। वह बड़ों के सम्बन्ध में चलना सीख जाता है। उनका प्रणाम का तरीका और अन्य बर्ताव दूसरों पर अच्छा असर डालता है, कई जनों का इतने परिवर्तन से ही बहुत बड़ा भला हुआ है। मेरे सामने की घटना है, कि एक भद्र जन एक देव समाज

के माननीय जन को मिलने के लिए आया, उस माननीय जन ने अपने स्वभाव से ही जो उस भद्र जन का स्वागत किया, उस से उस जन पर इस कदर गहरा असर हुआ कि वह उस को वर्षों तक न भूल सका। और जगह - जगह उस का प्रकाश करके तृप्ति पाता रहा। यह भद्र जन और देव समाज के माननीय जन पहले एक दूसरे से वाक़फ़कार नहीं थे; हुआ केवल इतना कि इस माननीय देवसमाजी ने अपनी कुरसी जो अपेक्षाकृत बेहतर थी खाली करके उस भद्र जन को देदी और आप दूसरी कुरसी पर बैठ गए। इस प्रकार एक और स्मर्णीय घटना है, वह यह कि एक पुलिस अफसर एक देव समाज की संस्था में उस के हैड के पास मिलने के लिए गया, उस हैड का उसके सम्बन्ध में जो शिष्टाचार मूलक बर्ताव था, उसका उस अफसर पर इतना गहरा असर हुआ, कि जिस का ब्यान नहीं हो सकता। इस देव समाजी हैड के लिए उस प्रकार के शिष्टाचार का प्रकाश करना बहुत मामूली बात थी, जो देव समाज के कई समासदों में वर्तमान है। देव समाजियों को कई बार पता नहीं लगता, कि इस प्रकार की थोड़ी सी तबदीली से ही हमारा कितना कल्याण साधन होता है। एक अवसर ऐसा आया, कि जब देव समाजी हैड को उस पुलिस अफसर की मदद की जरूरत मालूम हुई, और उस पुलिस अफसर ने अपनी जान पर खेल कर उन की मदद की। मेरे पास कई माता पिता आते हैं, और अपनी सन्तान में शिष्टाचार सम्बन्धी उच्च परिवर्तन को देखकर बार - बार यह प्रकाश करते हैं, कि देव समाज की संस्थाओं में पशुओं को मनुष्य बनाने का काम किया जाता है।

3) इस अपनत्व से निकल कर पर के लिए सेवाकारी होने के परिवर्तन से पारिवारिक सम्बन्धों में जिस प्रकार की मिठास आ जाती है, उस को भी हमें बार - बार स्मरण करने की आवश्यकता है। इस अंग में देव समाज के भीतर सच्चे मोजज़े उत्पन्न होते हैं। यह देव समाज के उच्च मंडल में ही सम्भव था, कि पिता अपने बेटे के चरणों में गिरकर उस से माफी मांगे और अपने पहले किए हुए पाप का परिशोध करे, यह देव समाज के उच्च मंडल में ही सम्भव था, कि एक ससुर अपनी बहू के चरणों में सीस रख कर रोए और माफी मांगे, और अपने पहले के बुरे बर्तावों का परिशोध करे। यह देव समाज के ही उच्च मंडल में सम्भव था, कि एक लड़का अपने ऐसे पिता के सम्बन्ध में रोए और चिल्लाए, कि जिस ने उस की माता और अपने बच्चों को त्याग दिया था, और उस बच्चे के भीतर यह व्याकुलता पैदा हो, कि चाहे मुझे कितनी भी कुर्बानी करनी पड़े, मुझे बिछड़े हुए पिता को अवश्य अपने परिवार के साथ मिलाना है। और वह उन के लिए कई प्रकार की कुर्बानी करे और उस काम में सफलता लाभ करे। यह एक ऐसी करामात है, कि जिस के सामने मेरा सिर झुकता है। साधारण बच्चा ऐसे बाप को घृणा कर सकता है, कि जिस ने परिवार को त्याग दिया हो और मुफलसी के भंवर में फैंक दिया हो। धन्य हैं भगवान् देवात्मा, जो ऐसी करामातें उत्पन्न करते हैं। यह देव समाज के उच्च मंडल ने ही सम्भव कर दिया है, कि एक - एक घनाढय पति अपनी ऐसी पत्नी के साथ पूर्णता: हमदर्द और वफादार रहे, कि जो सदा बीमार रहती हो और जिस ने अपने पति के घर को अपने बच्चे से आबाद न किया हो, यह भगवान देवात्मा ने ही सम्भव किया है, कि पत्नियों को छोड़कर पति भी यावत्जीवन अपनी पत्नी के साथ वफादार रहें, और उस के जीते जी दूसरी शादी किसी तरह न करें, चाहे हालात कैसे भी हों। भगवान् देवात्मा ने ही तलाक की बुरी और महा हानिकारक प्रथा को सदा के लिए परित्यक्त कर दिया है। बाकी भगवान् देवात्मा ने ही बच्चों को मां बाप का उपकारी रूप दिखाया है, उन के सद्गुण दिखाए हैं; उन की सेवाओं का सुन्दर रूप दिखाया है, जिस का फल यह हुआ है, कि कई देव समाजी परिवार ग़ैर मामूली मिठास से

अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

4) भगवान देवात्मा ने अपने कई तुच्छ सेवकों के भीतर ऐसे सद्गुण पैदा किए हैं, कि जिन के कारण ही उन की धन में उन्नति हुई है। उन की पोज़ीशन में उन्नति हुई है। उन की इज्ज़त में उन्नति हुई है, आदि - आदि।

स्थूल देह त्यागी सरदार साहिब श्रीमान सावन सिंह जी के जीवन की कथा स्मर्गीय है, वह एक मामूली पटवारी थे, वह केवल भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से लाभ किए हुए उच्च परिवर्तन के कारण ही असाधारण रूप से कीमती वजूद बन गए। पंजाब सूबा के गवर्नर साहिब ने सरदार साहिब के साथ अपना जुटा फोटो क्यों खिचवाया, वह इसलिए कि वह उनके उच्च चरित्र से बहुत प्रभावित हुए थे। और उन्होंने ने ही यह लिखा था, कि भारत भर में मुझे ऐसा इमानदार जन नहीं मिला। और जहां-जहां भी तहसीलदार रहे वहां-वहां के रहने वालों ने उन को "फरिश्ता तहसीलदार" के नाम से पुकारा। अंग्रेज़ अफसर तो उन पर इतने मोहित थे, कि वह अपनी कलम से लिख गए हैं, कि सरदार साहिब ने क्या गवर्नमेन्ट और क्या प्रजा दोनों पर बहुत बड़े उपकार किए हैं। और उनका पेन्शन पर जाना क्या गवर्नमेंट और क्या प्रजा दोनों के लिए घाटे की चीज़ है। गवर्नमेन्ट की तरफ से उन्हें जागीर अता की गई। उन को मुरब्बे अता किए गए, दो नम्बरदारियां दी गई। यह सब कुछ देने के बाद भी उन के अफसर तृप्त नहीं हुए। वह यही चाहते थे, कि ऐसा फरिश्ता बहुत बड़े इनामों का अधिकारी है।

मेरे परलोक वासी भाई श्रीमान सुगना मल जी कनल के साथ भी भगवान देवात्मा की कृपा से उन के अंग्रेज अफसरों ने बहुत अच्छा बर्ताव किया। वह 35 रूपये माहवार के कर्लक कोयटा में नियत हुए थे। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से उन में जो शिष्टाचार और सदाचार के भाव पैदा हुए थे, उन की बदौलत उन्होंने बहुत जल्द उन्नति लाभ की और तीन वर्ष में ही 35 रूपये से 100 रूपये वेतन पर उन्नत किए गए। और एक सैक्शन के हैड बनाए गए। वह खुद मैट्रिक थे, लेकिन उनके अधीन कई ग्रेजुएट थे। मैंने जब अपना जीवन भगवान देवात्मा के कार्य में अर्पण किया और मैं सिन्ध से पंजाब आ गया, तो उन्होंने भी छलांग मारी। 100 रूपए की नौकरी छोड़कर वह 50 रूपये पर देव समाज में काम करने के लिए चले आए। उस के बाद जो स्वर्णीय घटना हुई वह यह है, कि गवर्नमेंट की तरफ से एक सूचना प्रकाशित हुई, कि जिस महकमा में श्रीमान सुगना मल जी काम करते थे, उस में काम करने वालों को कुछ खास इनाम मिलेगा, वह इनाम उन दिनों के काम के लिए था, जिन दिनों श्रीमान सुगना मल जी वहां काम करते थे। श्रीमान सुगना मल जी ने अपने बड़े अंग्रेज अफसर को दरख्वास्त दी कि मैं नौकरी तो छोड़ चुका हूं, लेकिन मैं इनाम का अधिकारी हूं। इस अफसर ने श्रीमान सुगना मल जी को प्यार भरा पत्र लिखा, कि मैं तुम्हें इनाम भेज रहा हूं, और यह भी लिखा, कि तुम्हारे लिए यदि सम्भव हो, कि तुम फिर नौकरी पर आ जाओ, तो मैं तुम्हें अच्छी तनरख्वाह दिला दूंगा। उसके अधीन सैकड़ों आदमी काम करते थे, उसका दिल श्रीमान सुगना मल जी की तरफ क्यों आकृष्ट हुआ, इसलिए कि भगवान देवात्मा के देव प्रभावों ने उन के हृदय में जो महकदार भाव उत्पन्न किए थे, उनकी की खुशबू से उन की कीमत बढ़ गई थी।

इसी प्रकार श्रीमान बालकृष्ण जी फरलिया का दृष्टान्त है, उन के पाए हुए गुणों का उन के अंग्रेज अफसरों और उनके साथियों पर इतना असर था, कि सब उन को एक खास हस्ती समझते थे, और बड़े-बड़े अंग्रेज अफसर जिन के साया से और डरते हैं, उन के पास श्रीमान फरलिया न केवल बेधड़क चले जाते थे, बल्कि सन्मान पाते थे।

भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का कैसा अनोखा और विचित्र कार्य और हम लोगों पर भगवान देवात्मा का कितना महा उपकार!!।

5) भगवान देवात्मा के देव प्रभाव जो विश्वास का जीवन पैदा कर देते हैं, उस के कारण हमारा बहुत बड़ा भला होता है, लाखों रुपए रखकर एक-एक घनाढय की इतनी कीमत नहीं बढ़ती, कि जितनी कीमत भगवान देवात्मा के एक-एक सेवक की बढ़ जाती है, जब उसका जीवन विश्वास का पात्र बन जाता है। एक-एक साधारण जन भगवान देवात्मा के इस दान को पाकर हज़ारों दिलों में जगह लाभ कर लेता है। यह एक विचित्र लीला है। श्रीमान लाला हरीदास जी बी. ए. फीरोज़पुर में देव समाज गर्लज़ हाई स्कूल के हैड मास्टर थे, यह सच है कि वह बहुत मेहनती थे, लेकिन मेहनती जन दुनिया में और भी बहुत मिलते थे, यह सच है कि वह यूनीर्वस्टी परीक्षाओं में अच्छे नतीजे पैदा कर देते हैं, परन्तु इस प्रकार के और भी हैड मास्टर थे, जो अपने स्कूलों में सौ फ़ी सदी फल पैदा करते हैं, परन्तु श्रीमान हरीदास जी भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से एक ऐसी विशेषता के मालिक हो गए, जो दुनिया में दुर्लभ है। वह लड़कियों और स्त्रियों के सम्बन्ध में बहुत बड़े विश्वास के पात्र बन गए। इसलिए बड़े-बड़े फ़ौजी अफसर भी अपनी नौजवान कन्याओं को उनके पास सुरक्षित समझकर उनके घुटनों को हाथ लगा कर प्रणाम करते थे।

स्थूल देह त्यागी श्रीमान मास्टर खान चन्द जी इस अङ्ग में हज़ारों दिलों पर अपना सिक्का जमा गए हैं। वह जिस प्रकार की पवित्रता को लाभ कर चुके थे, उसका ही यह फल है, कि उनकी बरसी हर साल बाहर के लोग बहुत सन्मान् भाव से मनाते हैं, और उन की महिमा गाते नहीं थकते।

6) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से प्रभावित हो कर कई जन इस योग्य बन गए हैं, कि जो धन के बड़े-बड़े त्याग करते हैं। श्रीमान सेठ नानू मल जी ने पूजनीय भगवान देव प्रभावों से 50000 रूपए का दान किया था, श्रीमान डाक्टर श्री राम जी ने अपने स्वार्थ से निकल कर अपना सारा नकद रुपया जिस की संख्या हज़ारों तक जाती है, पूरे उत्साह के साथ दान दे दिया और उसके बाद उन के दान का क्रम हो रहा चलता श्रीमान मेवा सिंह जी ने कि जो देव समाज के कर्मचारी, अपनी सारी नकद पूंजी की जिस की संख्या हज़ारों तक की है, बहुत बड़े उत्साह और उच्च भावों के साथ दान कर दी। महोत्सव के अवसर पर भगवान देवात्मा की आने वाली शताब्दी के उपलक्ष्य में कई सेवकों ने आठ साल तक एक मास की आमदनी प्रति वर्ष देने की प्रतिज्ञा की, दृश्य इस स्वार्थ परायण देश के लिए एक असाधारण दृश्य था। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव मनुष्य को पर सेवा में ही सुख पाने वाला बना देते हैं।

7) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में पलकर कई जन अच्छे एडीटर बन गए और कई अच्छे लैक्चरार बन गए और वह साहित्य के द्वारा बहुत बड़े सेवाकारी बनते रहे हैं। 'सेवक' और 'विज्ञान-मूलक धर्म' को छोड़कर जिन के इंचार्ज देव समाज के कर्मचारी थे। 'सत्य देव सम्वाद' के असिस्टेन्ट एडीटर श्रीमान कपूरचन्द जी रहे, यह केवल मैट्रिक पास थे। परन्तु भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर वह दिनों दिन लेख लिखने की इस प्रकार की योग्यता पाते जाते हैं, जिस से बड़े-बड़े बी. ए. और एम. ए. वंचित हैं। श्रीमान कपूर चंद जी का कैसा सौभाग्य! कर्मचारियों में श्रीमान अमर सिंह जी जो मिडल पास करके भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आए थे, एक बहुत बड़े पाए के लेखक बन गए। कई कर्मचारियों और सेवकों के जो उर्दू में जीवन चरित्र वर्तमान हैं, उन में से बहुत बड़ी संख्या के वही लेखक हैं। और वह वर्षो तक एडीटर रहे हैं। मुझ तुच्छ पर भी इस पहलू

में बहुत बड़ा उपकार हुआ है, जिस का मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। कई छोटे मोटे पम्फलिट छोड़कर मैं प्राय: 17 वर्ष से 'विज्ञान मूलक धर्म' का एडीटर रहा। और पूजनीय भगवान का अंग्रेजी में जीवन चरित लिखने का अधिकार पा चुका हूं, जो प्राय: 700 पृष्ट का बड़ा ग्रंथ है। और उर्दू हिन्दी और अंग्रेजी में सैकड़ों लेख लिखने का पाया और मैं अपने सामने भगवान देवात्मा की ज्योति में इतना खुला हुआ वसीह मैदान देखता हूं, कि मैं यह अनुभव करता हूं, कि इस ज्योति में रहते हुए मैं हज़ारों लेख लिख सकता हूं। और जो सब भगवान देवात्मा के देवरूप और उन की शिक्षा की महिमा के विषय में हों। मेरे साथ पढ़े हुए कालेज के ग्रेजुएट में से एक भी ऐसा जन मालूम नहीं होता, कि जिस के जीवन से इतना काम निकला हो।

8) भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने अच्छी नौकरी और आगे की बहुत चमकदार उम्मीदों को लात मार कर भगवान देवात्मा के जीवन व्रत की सिद्धि में काम करने के लिए अपना सारा जीवन भेंट कर दिया। उस समय वह नौजवान थे, और उन्हों ने सारी उमर भगवान देवात्मा के जीवन व्रत की सिद्धि के कार्य में सफल की। श्रीमान भाई मोहन देवी जी 130 रूपए की नौकरी को छोड़कर अपनी जन्म भूमि और मित्रों को त्याग करके 26 वर्ष की भरी जवानी में भगवान देवात्मा के कार्य में लग गए, वह प्राय: 63 साल की आयु में गुज़रे। उन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष पूरी वफादारी के साथ भगवान देवात्मा के कार्य में व्यतीत किए। डाक्टर कुमारी प्रेम देवी जी अपनी शादी और अन्य नाना प्रकार की उम्मीदों का त्याग करके भगवान देवात्मा के कार्य में लग गई। और जब तक जीती रहीं, भगवान देवात्मा की महिमा को पूरी वफादारी के साथ फैलाती रही और अधिकारी स्त्री पुरुषों तक उन का महा दान पहुँचाती रहीं। औरों को छोड़कर श्रीमान भाई अमर सिंह जी का दृष्टांत हमारे सामने है, उन्होंने 18साल की उमर में अपना जीवन भगवान देवात्मा के चरणों में अर्पण किया था, आप यह 77 साल से ऊपर की उमर तक हमारे सौभाग्य, वशत: हमारे सिरों पर विराजमान रहे। प्राय: 60 वर्ष से वह भगवान देवात्मा का कार्य कर करते रहे।

अब यह नाना प्रकार के सुन्दर फल जो भगवान देवात्मा के देव प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं, उन को हम स्मरण करें। और जहां एक ओर पाए हुए उपकारों के लिए आप धन्य - धन्य हों, वहां दूसरी तरफ औरों तक इस शुभ सम्वाद को पहुंचा कर उन का आत्मिक कल्याण करने के योग्य हों।

पी. वी. कनल

शोक समाचार

बहुत शोक है कि देव समाज के पुराने वरिष्ठ सेवक श्रीमान मुन्शी राम जी मोगा और उनके परिवार के लिए बहुत सदमा लगा है। श्रीमति निरमला जी धर्म पत्नी, श्रीमान मुन्शी राम जी का 85 साल की उमर में, 25 नवम्बर 2013, सोमवार सुबह 4 बजे, अपनी जीवन यात्रा पूरी करके परलोक सिधार गई।

हम श्रीमान मुन्शी राम जी और उनके परिवार के लिए अपनी संवेदना प्रगट करते है और उनकी आत्मा की शांति के लिए कामना करते हैं।

(बलदेव सिंह)

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी और तलवंडी साबो से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कल्याण के इतिहासिक स्थान कल्याण पहुंचे **7.11.2013 शाम 7 बजे** सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि हम बहुत सा ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु यदि उसे अमल में नहीं लाते तो केवल मान्सिक सन्तोष ही देता है, पर उसका कोई लाभ नहीं होता। हम जानते हैं कि सुबह की सैर बहुत लाभदायक है, परन्तु उस पर अमल नहीं करते। हम जानते है कि तली हुई चीज़ें, मिठाईयां सेहत के लिए हानिकारक हैं, परन्तु उन्हें त्याग नहीं कर सकते, तो जानना निरर्थक है। हम जानते हैं कि धर्म संगत जो भगवान देवात्मा ने पैदा की हैं, उसमें आकर हमारा भला होता है, परन्तु यह ज्ञान तभी लाभदायक है यदि हमारे अन्दर उस संगत के लिए आकर्षण पैदा हो जाये। श्रीमान नेतराम जी उदाहरणें देकर बताया कि इस सच्चे ज्ञान ने उन्हें कैसे फरिश्ता बना दिया। स्त्री जगत के सच्चे रखवाले बना दिया। यह ज्ञान हमें स्वैअध्य्यन के लिए भी मजबूर करेगा। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विषय पर ज़ोरदार प्रेरणा की।

8.11.2013 सभापति श्रीमान बलेदव सिंह जी ने बताया कि कल्याण का मन्दिर सबसे पहले बना था, परन्तु पू० भगवान को श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने पहचाना और फिर भी उन्होंने यह पद रचे "मैंने तुमको नहीं पहचाना" सभापति जी ने बताया कि उनके पिता जी को इस संगत की कुछ कीमत पता लग गई थी, उन्होंने मेरी माता जी को आख़री समय में यह कहा था कि धर्म संगत शाही सड़क है, इसको कभी न छोड़ना, यदि इस पर चलोगी तो, तुम्हारा और बच्चों का मैं सब कुछ बना देखता हूं। माता जी कहा करते थे कि मुझे तो नम्बरदार जी कह गए थे कि ऐसा गुरू न कोई हुआ है और न होना है। इससे अच्छी कोई शिक्षा नहीं। इसके असरों से अथाह हित होता है। यहां के एक अध्यापिक को सेहत का काफी ज्ञान है, और उन्होंने अपनी सेहत का बहुत ध्यान रखा है, परन्तु इस प्रकार का ध्यान वा फिकर हमें देव धर्म संगत का नहीं है। कमाई करनी भी अवश्यक है, परन्तु अच्छी संगत के बिना हम खतरे में हैं। यह पक्का इरादा होना चाहिए कि हमने कोई सभा नहीं छोड़नी। कोई सत्संग वा उत्सव नहीं छोड़ना। मेरा दिल बैठ जाता है, जब कोई सेवक उत्सव, महोत्सव पर नहीं आता।

8.11.2013 शाम 4 बजे – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी- उन्होंने बताया कि बेशक हमें ज्ञान हो गया है कि हमें हमारे भाव चलाते हैं, पर यह समझ गहरी नहीं। एक और सचाई है कि आम मनुष्यों में कोई उच्च वा सात्विक भाव नहीं होता, कोई एक आध थोड़ी मात्रा में होता है। इस लिए सारा समय स्वार्थ में ही बीत जाता है। आम तौर पर हमारे परिचालक भाव धन अनुराग, स्वाद अनुराग, वासना, स्वार्थ, प्रशंसा मान, बढ़ाई आदि की तृप्ति ही करवाते हैं। जब हमें पू० भगवान की रोशनी में कुछ अंश नज़र आते हैं, तो उससे होने वाले नतीजे अर्थात दुख और हानि भी नज़र आते हैं। इनसे मोक्ष की अवश्यकता अनुभव होती है। काम वासना और धन अनुराग की कई घटनाएं बताई। हम अपने परिचालक भावों को जान सकें, तभी हमारी भलाई है।

9.11.2013 , सुबह 9 बजे – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी- उन्होंने बताया कि मनुष्य को अपने विषय में ज्ञान नहीं हैं। अज्ञान से दुख और हानि की उत्पत्ति होती है। भाई भाई जायदाद के लिए लड़कर मर जाते हैं। हम सब सुखों के दास हैं। सुख हमें उल्टा दृष्टा बनाते हैं, हम so far and no futher नहीं कह सकते। शराब के नशे में दुर्घटना के नित लोग शिकार होते हैं। एक पुलीस इंस्पैक्टर शराब का इतना आदी हो गया कि नौकरी छूट गई, पत्नी जो स्कूल टीचर थी, उससे रिक्शा के पैसे मांग कर लेता और फिर शराब मे धुत घर लौटता। इंडियन हाकी का player था, परन्तु सब कुछ छूट गया। पत्नी ने इन्तहा दुख झेलकर बच्चों को पाला, किसी ने अपने सुख में अन्धा होकर पत्नी को मारकर तन्दूर में जला दिया। विद्वान, अमीर, पदधारी सब अज्ञानता से घिरे हुए हैं।

गोनियाना : 9.11.2013 , सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। मनुष्य मात्र में मिथ्या मूलक विश्वासों की भरमार है, उससे पाप, कठोरता, जुल्म फैल रहा है। गुरू महाराज ने आसान भाषा में बताया है कि नेचर के चारों जगतों के प्रति उच्च गतियां ही धर्म है। दूसरों के अधिकारों का सत्कार, स्वीकृति और उनका विकास करना ही धर्म है। भगवान देवात्मा सच्चे धर्म अवतार हमारे सब सम्बन्धों को उच्च भावों द्वारा स्वर्गिय बनाते हैं। भौतिक जगत की वस्तुओं को साफ सुथरा रखना, माता पिता, पति, बहन भाई सब सम्बन्धों में सदव्यवहार धर्म है। सत्गुरू हमें धर्मवान बनाने की समर्थ्य रखते हैं।

9.11.2013 , थराजवाला: सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने बताया कि मिथ्याओं से बेहद बेहूदा काम किए जाते है। कर्नाटक में ऐसी रीत है कि बच्चे को टांगे बांधकर 30 फुट से नीचे फैंक दिया जाता। कहीं गोबर में बच्चों को लपेटा जाता है, कहीं ज़मीन में गाड़ा जाता है, इनसे मनोकामनाएं पूरी होनी बताई जाती हैं। मनुष्य के सुख अनुरागों की कामनाएं अन्धेरा पैदा करती हैं मेरे पिता सात्विक जीवन धारी थे, मेरे शराब पीने को टोकते थे तो मुझे उनके घर में पैदा होना ही श्राप लगता था। देवात्मा ने उनका सुन्दर और उपकारी रूप दिखाया। पू० भगवान के कारज की महिमा महान है।

10.11.2013 , सुबह 9 बजे - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मुझे गुरू महाराज का दर मिला है। इस कारज में काम करने पर एक ग्रामीण स्त्री ने मुझे पागल करार दे दिया कि पढ़ लिखकर मैं कैसा काम कर रहा हूं। यह निराला मिशन हमें कमाल की रोशनी देता है। नई जाग्रति, नई होश प्रदान करता है। यह मिशन हमारी पापों वा मिथ्याओं से रक्षा करता है। बाबा करतार सिंह जी ने इस मिशन से जुड़कर अपना वा अपने परिवार का अथाह भला किया है। अब इस मिशन से दूर होकर उनका परिवार महा दुख उठा रहा है। श्रद्धेय श्रीमन ईश्वर सिंह जी, श्री कनल जी के महान जीवनों ने मुझे इस मिशन में काम करने के लिए प्रेरणा दी। जो मनुष्य महान जीवनों की पैरवी करता है, वह हित प्राप्त करता है।

10.11.2013 , सभापति श्रीमान बलबहादुर जी: ईश्वर का कोई वजूद नहीं, यदि हो भी तो जाप करने का कोई लाभ नहीं। अच्छे अमलों से जीवन बनता है। पू० भगवान ने एक कर्मचारी को अपने साथ सैर करने जाने से मना कर दिया क्योंकि वह सुबह अपने माता को प्रणाम नहीं करते थे। उन्होंने एक स्त्री और एक भाई का उदाहरण दिया जिनका जीवन अपने सम्बन्धों में बहुत प्यार, सत्कार वा सेवाकारी था। ऐसे जीवन प्रशंसा योग्य होते हैं। हमारे गुरू ने हमें सब प्रकार के जपों तपों से मुक्त कर दिया है और सम्बन्धों में शुभ व्यवहार की शिक्षा दी है। हमें ऐस गुरू की शिक्षा की सच्ची कदर करनी चाहिए।

11.11.2013 , सुबह 9 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, उन्होने बताया कि यदि ज्ञान पर अमल न किया जाए, तो कोई लाभ नहीं। सत्संग से उच्च प्रेरणाएं मिलती है। सच्चे सत्संग से जुड़ने का अर्थ है कुछ त्याग करके सत्संग में आया जाए। विद्या से भी ऊंची चीज़ सच्चा सत्संग है। बच्चों को भी सत्संग में लाना चाहिए। इस सत्संग ने कैसे कैसे फरिश्ते पैदा किए हैं, उनके उदाहरण दिए।

मल्लेका : 11.11.2013, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी - उन्होंने बताया कि सत्संग से धर्म का सच्चा ज्ञान वा रोशनी मिलनी चाहिए। उच्च प्रेरणाएं मिलनी चाहिए। परम पू० भगवान देवात्मा के देव असरों ने निराली संगत पैदा की है। फिर नेचर के जगतों के विषय में ब्यान किया। नेचर के चारों जगतों में जो परिवर्तन होता है, वह किसी नियमों के द्वारा होता है। यदि इस अटलता पर विश्वास हो जाए तो बहुत सारी मिथ्या दूर हो सकती है। धर्म जीवन पर भी नियम की अटलता का राज है।

12.11.2013 , सुबह 9 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंने बताया कि जैसे कपड़ा साबुन से धोया जा सकता है, वैसे ही चिन्तन करने चाहिए। गुरू गोबिंद सिंह जी वा उनके साहिबजादों के गुणों का वर्णन किया। श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी के गुणों का भाव पूर्ण वर्णन किया। यह सभा काफी प्रभावशाली थी।

12.11.2013 , सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी हमारे धर्म सदियों से सम्बन्धों को छोड़कर ईश्वर उपासना को धर्म समझते हैं। देव धर्म नया वैज्ञानिक धर्म है। इसमें यह शिक्षा दी जाती है कि शारीरिक, मानसिक वा अध्यात्मिक विकास के लिए सम्बन्धों की अवश्यकता है। पू० भगवान की सारी शिक्षा सम्बन्धों में है। सब सम्बन्धों में कर्तव्य कर्म वा वर्जित कर्मों की पू० देवशास्त्र चौथे खण्ड में शिक्षा दी है। उन पर चलकर सच्चा धर्म प्राप्त होता है।

13.11.2013 , सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी- श्रीमान जी ने बताया कि सारे संसार में आतंकवाद, बलात्कार, भृष्टाचार फैला हुआ है यदि जप, तप, स्नान से पाप धोए जाते तो यह नज़ारा न होता। ऐसे संसार में पाप वा मिथ्या रहित होना ही कठिन है फिर किसी के गुण वा उपकार देखने और भी कठिन है। स्वार्थ त्याग करना भी कठिन है। एक बहन ने शादी के लिए शर्त रखी कि तभी शादी कराएगी यदि उसकी मन्दबुद्धि बहन को साथ ले जाने देंगे। वह साथ ले गई और जितने साल वह जिन्दा रही उसका ख्याल रखा। जिन मां बाप के बच्चे अच्छे हैं वह प्रणाम करने के योग्य हैं। कुछ जनों के गुणों का वर्णन किया। फिर श्रीमान जी ने दो उपकारी अध्यापिकों के उपकारों का वर्णन किया। श्रद्धा के साधनों द्वारा दिल पिघलाता है।

13.11.2013 रात 8 बजे- सभापति श्रीमान बलबहादुर जी-उन्होंने बताया कि नेचर के परिवर्तन के नियमानुसार हमारा शरीर, दिमाग वा आत्मा भी बदल रहा है। जिन भावों की तृप्ति होती रहती है, वह पहले से बलवान होते जाते है। बढ़ते बढ़ते नीच सुख अनुराग बन जाते हैं। वही हमें हांकते हैं, हमारी मर्जी नहीं चलती। उनके द्वारा चलकर हम क्या परिणाम भुगते हैं, क्या दुख और हानि उठाते हैं, उसका हमें ज्ञान नहीं होता। इन्हें जानने के लिए हो हमें देवात्मा गुरू की रोशनी की आवश्यकता है।

14.11.2013 , सुबह 9 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी-उन्होंन बताया कि हम न नेचर को जानते हैं, न उसके नियमों को जानते हैं। सेहत वा दिमाग विकसित, करने के नियम हैं। आत्मा के विकास के भी नियम हैं। जो नसल दूसरों के विकास में सहायक न हो, उसका नष्ट होना अवश्यक है। परोपकार जीवन का नियम है, स्वार्थ मौत का नियम है। अनपढ़ता, मिथ्या, मासाहार और अन्य बुराईयों दूर करना धर्म का कारज है। "सिर्फ अपने लिए जीना, जन्म अपना यह है खोना"।

14.11.2013 , पदमपुर रात 8.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी उनका विषय था आत्म शुद्धि। बलात्कार, भृष्टाचार, बेईमानी से आत्मा बिगड़ता है, विकार युक्त होता है। आत्मा निर्लेप नहीं। हर भले काम से आत्मा संवरता है। आत्मा की विकारों से शुद्धि कैसे हो? आत्मा के विकारों को देखने के लिए देव ज्योति की अवश्यकता है और देव बल की अवश्यकता है। देवात्मा मोक्ष दाता हैं। सभापति जी ने आत्मा की असल मुक्ति क्या खोलकर ब्यान किया।

15.11.2013 , सुबह 9 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंने बताया कि मनुष्य मान्सिक रूप से विकसित होने के कारण बहुत ज्ञान रखता है, पर उसे अपना ज्ञान नहीं, इसलिए हानि और दुख मिलते हैं। दुख परमात्मा नहीं भेजता, मनुष्य की अपनी शक्तियों के द्वारा ही दुख पैदा होते हैं। मनुष्य के भीतर की धातक शक्तियों के आगे कोई धन, कोई पद आदि की कोई पेश नहीं चलती। धन अनुराग मनुष्य को पागल बनाए हुए है। अंह भाव, स्वेछाचारिता, गुस्सा, स्वार्थ, घमंड मनुष्यों का नाश कर रहा है। देवात्मा की रोशनी में अपना आप नज़र सकता है।

15.11.2013, रात 8.30 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। उन्होंने बताया कि कहा जाता है old is gold, पर हर पुरानी चीज़ ठीक नहीं होती। कोई ठीक भी हो सकती है, कोई खराब भी। पहले लड़कियों को मार दिया जाता था, पत्नी को पति के साथ सती कर दिया जाता था। विधवा विवाह ठीक नहीं समझा जाता था, इसी प्रकार गुलामी की प्रथा थी, इसलिए हर बात हितकर वा अहितकर रूप में ठीक वा ग़ल्त होती है। परम पू० भगवान देवात्मा ने विज्ञान मूलक हितकर शिक्षा दी है। देव समाज में शामिल

होने के लिए चार प्रकार की हितकर प्रतिज्ञाएं कराई जाती हैं। उसके बाद देवात्मा अच्छे पति पत्नी अच्छे भाई बहन, अच्छे माता पिता, अच्छे बच्चे अर्थात हर रिश्ते को अच्छा बनाते हैं। व्यवहारों को सुन्दरता प्रदान करते हैं।

16.11.2013 , सुबह 9 बजे, सभापति श्रीमान बलदेवसिंह जी- सभापति जी ने बताया कि change is the sign of progress. सब कुछ बदल रहा है।पुराने धर्मों की जगह वैज्ञानिक सोच वाला धर्म ले रहा है। देव धर्म विज्ञान मूलक धर्म है, जो शरीर, आत्मा दोनों के विकास का मार्ग दिखाता है। घरों में दुख और अन्मेल हमारे नीच भावों के कारण है। मुझे अपना अंह नज़र आया है, उस रोग से किसी अंश मुक्ति पाई है। धर्म सबसे उत्तम लाभ है। अपना आप देवात्मा की रोशनी में नज़र आता है। उनके मिशन में काम आना महा सौभाग्य है। "बनाया काम का तूने, मैं तेरे काम आऊंगा।"

16.11.2013, रात 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर जी- इस सभा में उन्हों पू० भगवान के उपकारों को अनुभव किया। उन्होंने बताया कि उनकी ज्योति में मुझे अन्दर का अपना असली रूप नज़र आया। शराब की ओर दिल भाग भाग कर जाता था। हम नीच सुखों के कितने बन्धुए हैं, इसका मुझे स्वंय का अनुभव है। धर्म सम्बन्धियों ने मुझ तक गुरू के असर पहुंचाए, मुझसे शराब मास का त्याग करवा दिया। संगत कुछ अच्छी लगने लगी। इस पाक संगत में लगातार जाने लगा। माता पिता का उपकारी रूप नज़र आने लगा। बच्चों को मेहनत वा प्यार से पढ़ाने लगा। पति पत्नी का सम्बन्ध सुधर गया। गुरू महाराज के उपकारों का हृदय के गहरे भावों से वर्णन किया।

17.11.2013 , सुबह 9 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य की दो मूल इच्छाएं हैं। जीना और सुख से जीना। किसी का दिल दुखाए बिना, खाओ, पीओ मौज करो नहीं हो सकता है। ईमानदारी, पवित्रता, श्रद्धा, सन्मान, शुक्रगुजारी धर्म के भाव है, जितना इनका अपने हृदय पर अधिकार होगा, उतना ही आदमी धर्मवान होगा। इन भावों से जीवनी शक्ति बलवान होती है। उच्च सुखों द्वारा ही मनुष्य की दोनों मूल इच्छाएं पूरी होती हैं। यदि सम्बन्धों में शुक्रगुजारी आ जाए तो घर स्वर्ग बन जाता है। हमारे ऊपर उपकारों की वर्षा हो रही है। उपकारियों के प्रति प्रतिउपकार करने की अवश्यकता है। उन्होंने इस विषय में बहुत सुन्दर उदाहरणें पेश की। उन्होंने बताया कि मेरा रोम रोम गुरू का उपकृत है। मैं इसका कर्ज़ा नहीं चुका सकता। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के उपकारों का हृदय के भावों से वर्णन किया करते थे।

17.11.2013, रात 8.30 बजे- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि सारे मनुष्य सुख को प्यार करते हैं। नशा प्रेम, कामवासना, स्वाद सुख और आलस्य से मनुष्य की सेहत, उमर, इज्ज़त और आत्मा का नाश होता है, दुखों, संतापों की फसल भी पैदा करते हैं। धन, सम्पति, प्रेम सारी मनुष्यता के अन्दर है, पर किसी को उसका घातक रूप नज़र नहीं आता। इसी कारण परिवारों में लड़ाईयां और कत्ल होते हैं, आत्मघात होता है, घोटाले होते हैं, सच्ची घटनाओं द्वारा संसार की बदहाली का ब्यान किया। जनता के रक्षक और सेवा करने वाले कहलाकर भक्षक बने हुए हैं। भगवान देवात्मा की देव ज्योति के बिना, उनके देव तेज के बिना इन रोगों का कोई उपाय नहीं। यही मुबारक दर है जहां मनुष्य का, उसके परिवार और समाज का सच्चा भला और विकास हो जाता है। यही सच्चा ठिकाना है।

आरम्भिक दिन: – देव धर्म साधन मन्दिर में कुछ धर्म सम्बन्धी इक्टठे हुए। मिलकर भजनों का हृदयगत भावों से गान किया। हर भजन के बाद चार बार जय ध्वनि करते रहे। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने गुरू के दरबार में आशीर्वाद प्रार्थना की। आने वाले महा यज्ञ सम्बन्धी पाठ और विचार के साधन करने के लिए प्रेरणा की ताकि महोत्सव मुबारक और गुरू का सच्चा अमृत रस ज़्यादा से ज़्यादा मात्रा में प्राप्त करने के लिए अधिकारी बन सकें।

9.00 बजे सुबह: – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी- श्रीमान जी ने फरमाया कि देवात्मा एक अद्वितीय

शेष पेज 2 पर

Published on 5th of the month
24
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का प्रोग्राम

सोमवार 16 दिसम्बर 2013

प्रवेश सभा - 4.30 बजे सायं

मंगलवार 17 दिसम्बर 2013

1. पहली सभा - 9.00 बजे प्रात:

विषय – परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2. पब्लिक लैक्चर - 4.30 बजे सायं
3. संगीत सभा 7.30 बजे सायं

बुधवार 18 दिसम्बर 2013

(महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि - 6.30 बजे प्रात:

1. पहली सभा 9.00 बजे प्रात:

विषय – भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता । धन और जन की अपील ।

2. दूसरी सभा - 2.00 बजे दोपहर - बच्चों की सभा ।
3. पब्लिक लैक्चर - 4.30 बजे सायं
   वक्ता - डाक्टर विनोद जी खेड़ा
4. दीप माला - 6.00 बजे सायं
5. आलोचना सम्बन्धी सुझाव
   (लिखकर भी दे सकते हैं)

वीरवार 19 दिसम्बर 2013

1. पहली सभा - 8.30 बजे प्रात:

सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2. भाव प्रकाश
3. देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट : –

1. कृपया सेवक-सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।
2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तर अवश्य साथ लाएँ।
4. अपने आने की पहले संख्या समेत सूचना देने की कृपा करें।

******

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts